अतीत के झरोखे से

त्रेता युग के वैज्ञानिक चमत्कार

गोपाल कृष्ण फरलिया

सृष्टि के उद्भव के साथ-साथ ही विकास का भी प्रादुर्भाव होता है तथा मानव विभिन्न अन्वेषणों द्वारा तरह-तरह के वैज्ञानिक चमत्कार करता रहा है। मेरा यह मानना है कि सतयुग से लेकर अब तक वैज्ञानिकों ने विकास एवं विनाश दोनों को प्राप्त किया है। सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ एवं महानतम वैज्ञानिक एवं त्रिभुवन गुरु भोलेनाथ भूतभावन भगवान शंकर हैं **''तुम्ह त्रिभुवन गुरु बेदबखाना'' (रामचरित मानस)**। आपके वैज्ञानिक शिष्य राजर्षि जनक एवं उनकी पुत्री सीता, राजा राम, पवन पुत्र हनुमान और लंकापति रावण आदि थे। ये सभी वैज्ञानिक एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर थे। रामायण में वर्णित विभिन्न घटनाएं विज्ञान के चमत्कारों को ही प्रकट करती है। प्रस्तुत लेख में मेरे द्वारा जीवनकाल के प्रारम्भ में लिखे गए रामायण पर तकनीकी लेखों का संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास किया गया है।

रामायण में विभिन्न ऐसी घटनाओं का वर्णन आता है जिन पर कोई मानव आसानी से विश्वास नहीं कर सकता है। यह बात अलग है कि सनातनधर्मी जो श्री राम को भगवान मानते हैं श्रद्धावश सभी घटनाओं को सत्य मानकर नत-मस्तक होते हैं। मेरा यह मानना है कि ये सभी घटनाएं वैज्ञानिक आधार पर संभव हैं तथा रामायण में वर्णित सभी घटनाएं सत्य पर आधारित हैं जब मैं 11वीं या 12वीं कक्षा में पढ़ता था, मैंने कुछ घटनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करने का प्रयास किया था उनका पुनः संक्षिप्त रूप में प्रस्तुतीकरण करने का प्रयास कर रहा हूं।

1. भारत और लंका के मध्य पुल का निर्माण

रामायण में वर्णित है कि जब माता सीता के बारे में भगवान राम को पता लगा कि वे लंकापति रावण द्वारा लंका में कैद हैं तब उन्होंने वानर सेना के साथ लंका की तरफ प्रस्थान किया, किन्तु समुद्र तट पर आकर उनका मार्ग अवरुद्ध हो गया। समुद्र के द्वारा संकेत दिए जाने पर नल-नील नामक सिविल इंजीनियरों, जो देवताओं के वास्तुकार विश्वकर्मा के पुत्र थे, ने पुल का निर्माण किया। उस पुल में तैरने वाले पत्थरों का प्रयोग किया गया था जैसाकि सबको विदित है कि आज के युग में भी तरह-तरह के पुल नदी-नालों पर बनाए जाते हैं। इनमें से मुख्यतः एक मेहराव, कई मेहराव, लौहे के तार पर लटका हुआ पुल, जैसा कि लक्ष्मण झूला ऋषिकेश में बना है। इन सभी पुलों के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि पुल निर्माता नदी या समुद्र के दोनों किनारों से कार्य आरंभ करें। श्रीराम उस समय वनवास में होने के कारण अयोध्या से कोई सहायता नहीं ले सकते थे तथा दुश्मन की सीमा में कुछ निर्माताओं को भेजकर उनकी जान जोखिम में नहीं डाल सकते थे। इसलिए यह अनिवार्य हो गया कि ऐसा पुल बनाया जाए जोकि भारत सीमा से प्रारंभ होकर शनैः शनैः लंका की तरफ बढ़े तथा पुल निर्माण के साथ-साथ राम की सेना भी पुल पर आगे बढ़ती रहे जिससे कि आक्रमण की स्थिति में राक्षसों का मुकाबला किया जा सके। अतः जो परिकल्पना मैंने की है वह निम्न प्रकार है :

यह सर्वविदित है कि दक्षिण भारत में पश्चिमी तट पर उस समय ज्वालामुखी हुआ करते थे। ज्वालामुखी से निकलते हुए लावा वायु के कणों को अपने में समेट कर एक पत्थर बनाते हैं। जिसको हिन्दी में झांवा पत्थर बोलते हैं तथा आंगल भाषा में फयूमिस स्टोन बोलते हैं। इसकी विशेषता यह है कि इसका घनत्व एक से कम होता है तथा काफी मजबूत होता है अतः पानी में डालने

पर यह तैरता है। इस प्रकार के पत्थर आम जनता ने कई जगह देखे हुए हैं। जहां तक सिविल इंजीनियरों का प्रश्न है उनको इस पत्थर के बारे में ज्ञात ही है। भारत में धनुषकोटि के पास ऊंची चट्टानें होने का अनुमान किया जा सकता है। उन ऊंची शिलाओं से लोहे के रस्सों को शुरुआती पत्थरों को जोड़ने का प्रयास किया गया होगा जिससे कि भारतीय सीमा से सटे पत्थर पानी में इधर-उधर बिखर न जाएं। चूंकि रामचन्द्रजी के पास सेना काफी संख्या में थी अत: पत्थरों की अविरल आपूर्ति होती रही होगी। पत्थरों को एक विशेष आकृति में काटा जाता होगा जैसाकि चित्र संख्या 1 में दर्शित हैं समुद्र में तैरने वाले पुल के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि पुल लचीला हो तथा तरंगों के साथ-साथ ऊपर-नीचे तैरता रहे तथा इन विपरीत स्थितियों में भी पत्थर एक-दूसरे से अलग न हों। चित्र संख्या 1 से स्पष्ट है कि **जानु-सन्धि** के प्रयोग द्वारा पत्थर एक दूसरे से जुड़े रहते थे तथा प्रत्येक पत्थर ऊपर नीचे होने में स्वतंत्र थे जिससे कि पत्थर टूटने की बजाय एक दूसरे से जुड़े रहते थे। पत्थरों को जोड़ने की इस पद्धति का प्रयोग होने का शास्त्रीय प्रमाण भी प्राप्त है। ऋषि परम्परा के एक वैज्ञानिक ''बुद्ध कौशिक'' ने श्रीराम के स्तवन में एक स्रोत की रचना की थी जिसका नाम है ''रामरक्षास्त्रोतम्''। इसमें श्रीराम की विभिन्न जीवन लीलाओं की उपमा उनके अनेक नामों से दी गई है। उसी का एक स्रोत है।

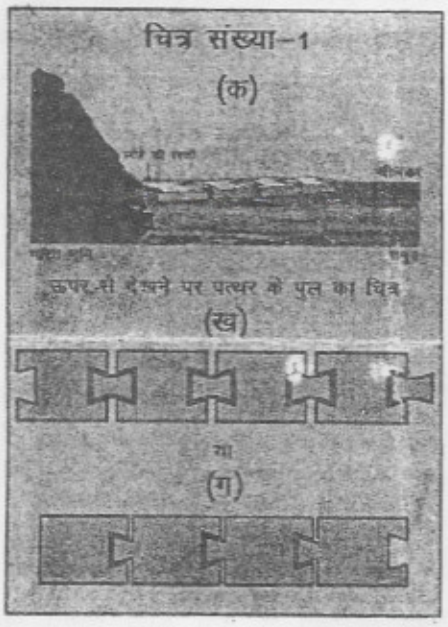

जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दशमुखान्तक:।
पादौ विभीषणश्रीद:पातु रामोऽखिलं वपु:

(राम रक्षास्तोत्रम्-9)

प्रथम पाद का अर्थ है जानुओं की सेतुकृत श्रीराम रक्षा करें अस्तु, भारत में धनुषकोटि के पास शिलाओं से रस्सियों द्वारा प्रथम शिलाखंडों को जोड़ा गया जिससे कि वह समुद्र में न बह जाए तथा यथोचित चौड़ाई में आगे बढ़ते हुए चित्र संख्या-1 में दर्शित आकार के पत्थरों को एक दूसरे में फंसाते हुए सेना आगे बढ़ती गई तथा समुद्र पार कर लिया गया।

2. स्वर्ण लंका का निर्माण

भोलेनाथ शिव चूंकि महान वैज्ञानिक थे (जैसा कि आजकल पाया जाता है वैज्ञानिक लोग प्राय: एकान्त में ही निवास करना चाहते हैं जिससे कि अनुसंधान करते समय व्यवधान न आए। इसलिए बाबा भोलेनाथ भी हिमालय के अन्दर कंदराओं में निवास करते थे। बाबा भोलेनाथ के शिष्य काफी पैसे वाले एवं प्रभावी थे। एक बार भगवती पार्वती ने बाबा भोलेनाथ से कहा कि आपके चेले इतने पैसे वाले एवं संतोषजनक स्थिति में रहते हैं, आप भी अपने परिवार के लिए एक सुन्दर नगर का निर्माण करें जिससे कि हम भी ऐश्वर्य से रह सकें। भगवान शिव ने वैज्ञानिक चमत्कार के द्वारा सोने के एक नगर का निर्माण किया। मेरी परिकल्पना के अनुसार उसका विवरण निम्न प्रकार है :

आज का विज्ञान यह मानता है कि एक तत्व को दूसरे तत्व में बदला जा सकता है इसके लिए प्रोट्रोनों, न्यूट्रोनों एवं इलैक्ट्रोनों की संख्या में फेरबदल करने की आवश्यकता है। कुछ तत्व जैसे यूरेनियम आसानी से विखण्डित हो जाता है तथा कुछ तत्वों को विशेष प्रक्रिया द्वारा विखण्डित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया के लिए ऊर्जा की आवश्यकता तत्वों के स्थायित्व पर निर्भर करती है, जिसको कि हम प्रत्येक तत्व का विखंडन हेतु न्यूनतम ऊर्जा **से जानते हैं। इस विखंडन क्रिया में** ऊर्जा का उद्भव भी होता है तथा ऊर्जा का प्रयोग भी करना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर अगर कम न्यूट्रोन-प्रोटोन संख्या वाले किसी तत्व को उच्च श्रेणी तत्वों जिसमें कि अधिक मात्रा में न्यूट्रोन-प्रोटोन हों, को परिवर्तित करते हैं तो बाह्य ऊर्जा द्वारा न्यूट्रोन-प्रोटोन को परमाणु में डालना होगा (संगलन प्रक्रिया द्वारा) इसके विलोम प्रक्रिया में ऊर्जा परमाणु से निकलेगी परमाणु बम इसी प्रक्रिया के द्वारा बनता है जैसा कि सर्वविदित है कि लोहा प्रचुर मात्रा में लगभग हर क्षेत्र में उपलब्ध

होता है किन्तु स्वर्ण पृथ्वी पर एक दुर्लभ एवं कीमती तत्व है। परमाणु विन्यास के अनुसार लोहे में इलैक्ट्रोन प्रोटोन एवं न्यूट्रोन की संख्या क्रमशः 26, 26 और 30 होती है। इसी प्रकार सोने में भी इसी क्रमानुसार 79, 79 और 118 है। अतः सिद्धान्ततः अगर लोहे को सोने में परिवर्तित करना है तो यथोचित संख्या में न्यूट्रोन प्रोटोन आदि को नाभिक (न्यूक्लियस) में डालना होगा जिसके लिए विशाल ऊर्जा की आवश्यकता होगी। अगर आप यह प्रश्न उठाते हैं कि भोलेनाथ ने स्वर्ण लंका बनाने के लिए श्रीलंका को ही क्यों चुना? जैसा कि सर्वविदित है कि श्रीलंका भूमध्य रेखा के निकट है। भूमध्य रेखा पर सूर्य की कृपा प्रायः रहती है जिससे कि सौर ऊर्जा लगभग 12 महीने उपलब्ध रहती है। वैज्ञानिक सिद्धान्त यह बताता है कि अगर दो बिन्दुओं में तापान्तर है तब कार्य किया जा सकता है। आज का वैज्ञानिक यह भी बताता है कि पृथ्वी सूर्य के प्रकाश से बड़ी तेजी से गरम होती है तथा रात में उसी तेजी से ठंडी होती है। समुद्रीय जल का विशिष्ट ताप अधिक होने के कारण शनैः शनैः गरम होता है। तथा रात में शनैः शनैः ठंडा होता है। इसी कारण समुद्री हवाएं तापान्तर के कारण चलती हैं। मेरा कहने का उद्देश्या है कि दिन हो या रात समुद्र और पृथ्वी के मध्य तापान्तर रहता है।

इस विशाल ऊर्जा का भोलेनाथ शिव ने लोहे के परमाणु को स्वर्ण परमाणु में बदलने के लिए प्रयोग किया। इस सिद्धान्त के आधार पर जब सोने की लंका बन गई तब उसमें थोड़ी-बहुत कई स्थानों पर कमी रह गई। जैसाकि आज के युग में हम जब गृह-प्रवेश करते हैं एवं विघ्न-बाधा निवारण हेतु पूजा अर्चना करते हैं उसी प्रकार भगवान शिव ने जब देखा कि सोने की लंका बन गई तब गृह-प्रवेश के बहाने अपने शिष्य की परीक्षा लेने का निर्णय किया। रावण महा विद्वान योग्य ब्राह्मण था, अतः इस परीक्षा के लिए उन्होंने रावण को चुना। रावण भी एक महा विद्वान होने के कारण परमाणु विखंडन एवं संयोजन की क्रिया को जानता था, अतः उसने थोड़े-बहुत स्थानों में जो अपूर्णता रह गई उसको बड़ी कुशलता से पूर्ण कर दिया। भोलेनाथ शिव भोले होने के कारण रावण पर अत्यंत प्रसन्न हुए तथा प्रसन्नतावंश उससे कुछ मांगने के लिए कहा। चूंकि रावण बहुत चतुर था, इसलिए उसने भोलेनाथ शिव से सोने की लंका ही मांग ली और भोलेनाथ फिर हिमालय की कंदराओं में ही रह गए और रावण स्वयं सोने की लंका का राजा बन गया।

3. स्वर्ण लंका का दहन

स्वर्ण लंका दहन स्वर्ण नगरी के निर्माण की विपरीत प्रतिक्रिया रही होगी जब विखंडन क्रिया द्वारा परमाणु को तोड़ा जाता है तब उसमें से ऊर्जा निकलती है। जैसे कि एक परमाणु बम में होती है। हनुमानजी को भी शिवजी का अंशज कहा गया है तथा वे कालातीत श्रेष्ठतम वैज्ञानिक ही नहीं विशुद्ध वैज्ञानिक थे।

सीताराम गुणग्रामपुण्यारय विहारिणौ।
बन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ॥

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड, मंगल श्लोक-4)

हनुमानजी को तत्कालीन वैज्ञानिक रहस्यों का ज्ञान था। जब वे सीताजी की खोज में लंका गए तब अपनी वैज्ञानिक योग्यता को उजागर करने के लिए उन्होंने सोने की लंका को लोहे में परिणित करने का निश्चय किया। इस विखंडन क्रिया से जो अत्यधिक ऊर्जा निकली तब स्वर्ण नगरी लोहे में तो परिवर्तित हो ही गई उसके आस-पास का वातावरण भी गरम हो जाने के कारण एवं विखंडन प्रतिक्रिया के प्रभाव के कारण दक्षिण क्षेत्र के लोगों की त्वचा काली पड़ गई।

4. सीता स्वयम्बर

राजा जनक भी भोलेनाथ शिव के परम प्रिय भक्त थे तथा उनके साथ अनुसंधान में लगे रहते थे। अनुसंधान करते-करते उन्होंने न्यूट्रोन-प्रोटोन को अलग करने की प्रतिक्रिया का आविष्कार कर लिया जिसके लिए आज का विज्ञान केवल संकेतमात्र करता है। यह सर्वविदित है कि एक बूंद प्रोटोन का वजन लगभग एक हजार टन के बराबर होता है। अगर मात्र न्यूट्रोनों या प्रोटानों से एक छोटा-सा धनुष बना लिया जाए तब वह कितना भारी होगा इसका अनुमान ही लगाया जा सकता है। अगर इस प्रकार के धनुष को उठाने का प्रश्न उठे तो शारीरिक शक्ति से उसे उठाना असंभव होगा। किन्तु अपने वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर विलोम प्रतिक्रिया करके साधारण परमाणु बनाकर यह कार्य किया जा सकता है। राजा जनक के इस धनुष को शिव धनुष के

3531 SRTH/08—7A

नाम से जाना जाता था। चूंकि वह शिवरूपी ज्ञान से राजा जनक को प्राप्त हुआ था। इस धनुष को राजा जनक ने अपनी प्रयोगशाला जिसका नाम धनुषयज्ञशाला था, में रखा हुआ था जहां पर कि वे नियमित रूप से अनुसंधान में लगे रहते थे। उनकी पुत्री सीताजी भी उनके साथ अनुसंधान कार्य में सहयोग प्रदान करती थीं। पिता के साथ कार्य करते-करते उन्होंने भी विलोम प्रतिक्रिया के रहस्य जानकर न्यूट्रोन-प्रोटोन तथा इलैक्ट्रोन का प्रयोग करके साधारण परमाणु बनाना सीख लिया था। अत: रामायण में वर्णन आता है कि एक दिन देवी सीता ने एक हाथ से धनुष उठाकर उसके नीचे सफाई कर दी जिससे संकेत मिलता है कि देवी सीता ने विलोम प्रतिक्रिया का ज्ञान प्राप्त करके कुछ परमाणु एवं न्यूट्रोनों का प्रयोग करके साधारण परमाणु में परिवर्तित कर दिया। जब राजा जनक को देवी सीता के वैज्ञानिक ज्ञान का पता चला तो उन्होंने कहा कि जो इससे अधिक ज्ञान रखता होगा उससे ही देवी सीता का विवाह किया जाएगा। अत: उन्होंने घोषणा कर दी कि जो शिव धनुष को तोड़ेगा उससे ही देवी सीता का विवाह कर दिया जाएगा। देवी सीता के विवाह हेतु पृथ्वी के बड़े-बड़े राजा-महाराजा वहां पर पधारे। सबने अपने-अपने बौद्धिक बल एवं ज्ञान के आधार पर इस रहस्य को सुलझाने का प्रयत्न किया। लेकिन जब सभी हार गए तब श्री रामचन्द्रजी जोकि भगवान शिव के शिष्य थे, उन्होंने विलोम प्रतिक्रिया द्वारा साधारण परमाणुओं में परिवर्तित करके उसको तोड़ दिया।

उपरोक्त कुछ घटनाओं पर वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है जो कि मैंने अपने जीवनकाल के प्रारंभ में वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर विस्तृत तौर पर लिखा था। इससे स्पष्ट है कि रामायण, महाभारत आदि में वैज्ञानिक ज्ञान कूट-कूट कर भरा पड़ा है। पुष्पक विमान का विवरण जगह-जगह आता है। ऋग्वेद में विभिन्न प्रकार के विमानों का वर्णन जगह-जगह आता है। प्रश्न यह उठता है कि जब भू-मंडल पर इतना वैज्ञानिक अनुसंधान हो चुका था तो वह सब कहां विलुप्त हो गया? एक दृष्टान्त देता हूं कि अगर आज तीसरा विश्व युद्ध हो जाए तब भू-मंडल से अधिकांशत: आबादी समाप्त हो जाएगी। आज जो वैज्ञानिक अनुसंधान हो रहे हैं उनसे हम तरह-तरह की सुविधाएं प्राप्त करते हैं वे सब समाप्त हो जाएंगी तथा भू-मंडल पर मानवों के कुछ समूह अलग-थलग रह जाएंगे जोकि पुन: अगर मैं प्रस्तर युग न कहूं पर खेतीहर युग से अपना कार्य प्रारंभ करेंगे तथा अपने बच्चों को आज के युग की सुख-सुविधाओं के बारे में बताएंगे जो कुछ उन्हें स्मरण रहेगा वे लिखित रूप में छोड़ने का प्रयत्न करेंगे। तीन-चार पीढ़ी के बाद ये सभी चीजें जैसे दूरदर्शन, मोबाईल, रेल, हवाई जहाज तथा राकेट आदि-आदि हमारे लिए एक कपोल परिकल्पना ही रह जाएगी। मेरा यह मानना है कि हमारे वेदों पर वैज्ञानिक अनुसंधान अगर किया जाए तो हम विभिन्न आविष्कार कर पाएंगे तथा उनके आधार पर आगे बढ़ पाएंगे।

अन्त में, मैं यह कहना चाहूंगा कि वैदिक गणित के आधार पर जो गणनाएं हम कर सकते हैं वे इस समय के आधुनिकतम गणित के द्वारा नहीं कर सकते हैं। एक उदाहरण-ज्योतिषियों द्वारा ग्रहों की चाल की गणना जोकि हजारों वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजों ने की थी आज भी सत्य है क्या इस प्रकार सभी ग्रहों की चाल की गणना बिना ज्ञान के संभव थी। अत: हमारे वेद-शास्त्रों में जो घटनाएं कल्पना दिखती हैं वे मेरे मतानुसार उस युग में सच्ची रही होंगी।

इस लेख के अद्यतनीकरण में वैज्ञानिक सिद्धान्तों का शास्त्रीय प्रमाणों से, समन्वय एवं परिपुष्टि करने में मेरा सहयोग करने के लिए मैं श्री महेन्द्र स्वरूप कौशिक,उप-निदेशक, केन्द्रीय विद्युत् प्राधिकरण के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

–डी-II/2005, वसन्त कुंज,
नई दिल्ली-110070

3531 SRTH/DR—7B

राष्ट्र के विकास में राजभाषा का योगदान

राजेश 'पंकज'

भाषा विचारों का परिधान है। यह मानव के बीच आपसी सम्पर्क का माध्यम होती है। अत: यह समाज के निर्माण का मुख्य आधार होती है। भाषा के कई स्तर हो सकते हैं जैसे कि व्यक्ति भाषा, प्रांत भाषा, राष्ट्र भाषा तथा राजभाषा। राजभाषा, भाषा का वह स्वरूप है जिसे शासन के काम काज का माध्यम बनाया जाता है। बहुदा राजभाषा व राष्ट्रभाषा एक ही होती है। जैसे कि वर्तमान में हमारे देश की राष्ट्रभाषा व राजभाषा को देखने से पता चलता है। राष्ट्रभाषा वह भाषा है जिसका प्रयोग पूरे राष्ट्र में अथवा राष्ट्र के अधिकांश क्षेत्र में सम्पर्क सूत्र के रूप में किया जाता है। भारत के अधिकतर प्रदेशों में बोली व समझी जाने वाली भाषा होने के कारण ही हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है। स्वतंत्रता से पूर्व अंग्रेजों का शासन होने पर भी हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी ही थी। परन्तु विदेशी शासन द्वारा राजभाषा के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग होता था। स्वतंत्र भारत में संविधान के अनुच्छेद द्वारा हिन्दी को देश की राजभाषा का पद प्राप्त हुआ। राजभाषा का राष्ट्र के विकास में क्या योगदान हो सकता है?

इस प्रश्न पर विचार करने से पूर्व हमें अपने देश की शासन प्रणाली तथा इसके उद्देश्यों पर भी विचार करना होगा। विदेशी शासन के कठोर रवैये के कारण स्वतंत्रता से पूर्व देश की अधिकांश जनसंख्या को नितान्त निर्धनता की अवस्था में रहना पड़ता था। इस कारण देश में साक्षरता की दर नाम मात्र की ही थी। अधिकतर श्रमजीवी जनता को शिक्षा की सुविधा प्राप्त नहीं थी। भारत हमेशा से एक कृषि प्रधान देश रहा है। अत: भारत की लगभग 90 प्रतिशत जनता गांवों में रहती थी जो कि निरक्षर थी। अत: जब भारत की शासन प्रणाली को अपनाने का निर्णय हुआ तो इसे जनतंत्र का आदर्श रूप माना गया। जनता का शासन चलाने के लिए जनता की भाषा का प्रयोग ही उचित समझा गया।

देश के विकास में पूरा योगदान वहां की जनता का ही होता है। यदि शासन प्रणाली की सम्पर्क भाषा जनता की भाषा हो तभी जनता की भागीदारी देश की शासन व्यवस्था में हो सकती है। जनता की शासन व्यवस्था में भागीदारी होने पर ही जनप्रतिनिधि जनता के आर्थिक व सामाजिक उत्थान के लिए योजनाएं बना सकते हैं, उनका सफलता से क्रियान्वयन कर सकते हैं। जनाधार एक शक्ति का स्रोत होता है जो कि राष्ट्र के विकास की गति को ऊर्जा प्रदान करता है। यह ऊर्जा ही नवनिर्माण की गारण्टी बन सकती है।

राजभाषा के माध्यम से शासन द्वारा जन कल्याण के कार्य की सूचना जन-जन में प्रसारित की जा सकती है। राष्ट्रभाषा अथवा जनभाषा तथा शासन की भाषा में समानता होने पर ही प्रजा लोक कल्याण की योजनाओं की पूरी जानकारी प्राप्त कर उनके लाभ प्राप्त कर सकती है। जनभाषा व राजभाषा समान होने पर प्रजा के मन में अलगाव की भावना कम होती है और प्रत्येक नागरिक अपने राष्ट्र के विकास में अपनी सकारात्मक भूमिका अदा कर सकता है।

जनता की भाषा में शासन द्वारा समाज में फैली कुरीतियों, भ्रांतियों का निदान किया जा सकता है। जन स्वास्थ्य से सम्बन्धित विषयों पर उपयोगी जानकारी जनता को उपलब्ध करायी जा सकती है। जिससे देश के नागरिकों के जीवन की स्थितियों में सुधार किया जा सकता है। प्रजा में राष्ट्रीय हित के मामलों में जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है।

राजभाषा के माध्यम से भाषाई वैमनस्य की समस्या का निदान हो सकता है। राजभाषा प्रादेशिक भाषाओं के

बीच सेतु का कार्य करती है। शासनतंत्र में मानक राजभाषा के प्रयोग द्वारा अन्य भाषा वाले समुदायों में राष्ट्रभाषा का प्रसार बढ़ता है। इसके द्वारा विभिन्न समुदाय राष्ट्रीय एकता की भावना से जुड़ते हैं और मुख्य धारा का अंग बनकर देश के विकास की भागीरथी में आ मिलते हैं।

राष्ट्रभाषा के सूत्र में पिरोई गई प्रान्तीय भाषाएं आपसी आदान-प्रदान द्वारा राष्ट्रभाषा को भी समृद्ध करती हैं। राजभाषा हिन्दी का ही प्रताप है कि आज हमारा देश शिक्षा के आन्दोलन का सूत्रधार बन गया है। साक्षरता की लहर ने पूरे देश को सराबोर कर दिया है। समान भाषा ने आपसी समानता की भावना को पुष्ट किया है। शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति के कारण आज हमारा देश विश्व के अग्रणी देशों की कतार में खड़ा है। विश्व मुद्रा बाजार में भारतीय मुद्रा का मूल्य निरन्तर बढ़ रहा है। विपन्नता से आत्म निर्भरता और इससे आगे बढ़कर विश्व की महाशक्ति बनने की ओर बढ़ते हमारे कदम विकास पथ पर राजभाषा के योगदान की ही गौरव गाथा है। हाथ कंगन को आरसी क्या?

आज हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी विकास के विजय पथ पर चलती हुई अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का पद प्राप्त करने की दावेदार बन गई है। भारत देश की युवा शक्ति ने अपने श्रम, ज्ञान व कुशलता द्वारा पूरे विश्व में भारत के विकास के झंडे गाडे हैं। पूरा विश्व आज भारत की और आशा की दृष्टि से देख रहा है। आज देश की विकास दर के रथ के पहियों की धुरी हमारी राजभाषा ही है। अन्तर्राष्ट्रीय सूचना क्रान्ति के महारथी गुगल और याहु ने भी इस भाषा की गरिमा को स्वीकार किया है और अपने सॉफ्टवेयर में इसका माध्यम अपनाया है। आज पूरा विश्व भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और हिंदी साहित्य का कायल हो रहा है।

वरिष्ठ लेखाकार, महालेखाकार
(लेखा व हकदारी) हरियाणा का
कार्यालय, चण्डीगढ़

राजमार्ग निर्माण प्रबंधन

आर के धीमान

हमारे देश में राजमार्ग प्रबंधन की प्रगति उत्तर दक्षिण और पूर्व पश्चिम कॉरिडोर विकसित करने तथा अन्य प्रमुख सड़क परियोजनाओं के कारण हो रही है। यह आवश्यक है कि सभी संसाधनों का अधिकतम उपयोग हो और जिन परियोजनाओं की विभिन्न चरणों में योजना बनाई जाती है, उनको समय पर पूरा किया जाए। परियोजना के आरम्भ से ही संसाधनों के समुचित उपयोग की आवश्यकता है और इसकी समीक्षा कार्य प्रगति के दौरान की जानी चाहिए। आधुनिकतम राजमार्ग निर्माण प्रबंध कार्य उपस्कर/संयंत्र उन्मुख है और इसमें आरम्भ में भारी निवेश की आवश्यकता होती है। परियोजना के समय पर पूरा होने के लिए कार्यस्थल पर कार्य कर रहे विभिन्न अनुभागों के बीच परस्पर संवाद और आपसी समझ आवश्यक है। तद्नुसार राजमार्ग परियोजना के कार्य के दौरान यह आवश्यक है कि कार्यस्थल पर संयंत्र, सामग्री, वित्त, गुणवत्ता, संरक्षा, प्रलेख और कार्मिकों का समुचित प्रबंधन हो। इस लेख में राजमार्ग निर्माण प्रबंधन के आवश्यक पहलुओं पर चर्चा की गई है।

राजमार्ग निर्माण प्रबंधन

परिचय

किसी भी राजमार्ग परियोजना की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आरम्भ से अंत तक उसकी गतिविधियों का कितनी अच्छी तरह से प्रबंधन किया जाता है। पूरी परियोजना को पूर्ण करने के लिए विभिन्न चरण निहित होते हैं। जैसे-सही समय पर निर्णय, अभिकल्प, रेखाचित्र और वित्तीय प्रबंधन का समय पर अनुमोदन। राजमार्ग परियोजना के मामले में अंतिम समापन इस बात पर निर्भर करता है कि निर्माण की प्रक्रिया के दौरान कितनी अच्छी तरह से महत्वपूर्ण मुद्दों के प्रबंधन पर निर्णय लिया गया है। परियोजना को समय पर पूरा करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात है कार्य के लिए उपयुक्त ठेकेदार का चयन, यथार्थ समय सारणी और ठेके का कुशल प्रबंधन। प्रबंधकर्ताओं को पहले ही से परियोजना की गतिविधियों के विकास से परिचित होना चाहिए। इस लेख में राजमार्ग परियोजना के निर्माण प्रबंधन पर चर्चा की गई है।

प्रबंधन की आवश्यकता

बड़े पैमाने पर हमारे बीच हो रही ढांचागत विकास गतिविधियों के साथ, खास तौर से चार लेनिंग/छः लेनिंग/आठ लेनिंग और अन्य राजमार्ग कार्य, काफी निधियां सड़क परियोजनाओं के लिए रखी जाती हैं, बुद्धिमता इसी में होगी कि इन्हें समय पर पूरा कर लिया जाए ना कि देरी की जाए। तद्नुसार, परियोजना की तैयारी और उपयुक्त ठेकेदार को कार्य देने की प्रक्रिया पर विवेकपूर्ण निर्णय लिया जाए। वस्तुतः कुशल प्रबंधन की आवश्यकता इन कारणों से महसूस होती है।

(1) कार्य को निर्धारित समय में और निधि का समुचित उपयोग करते हुए करना चाहिए।

(2) ऐसी परियोजनाओं में वृद्धि जिनमें भारी मात्रा में निर्माण सामग्री लगाई जाती है जिनका उपयोग नवाचारी प्रबंधन से किया जाना होता है।

(3) ऐसी परियोजनाओं की जटिलता में वृद्धि जिनमें उच्च ग्रेड सामग्री का उपयोग होता है।

3531 SRTH/08—8A

(4) कुशल कारीगरों की कमी, खासतौर से उन मामलों में जहां परियोजनाएं दूरस्थ इलाकों में स्थित हैं।

(5) अभिकल्प की गुणवत्ता और उच्च तकनीक की आवश्यकता ताकि खर्च को कम किया जा सके और राजमार्ग पर विभिन्न ढांचों को बेहतर किया जा सके।

उपरोक्त आवश्यकताओं के कारण निर्माण उपस्कर को सावधानी पूर्वक चुनना चाहिए और उसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि निर्धारित समय में उसका सर्वाधिक उपयोग किया जा सके। महंगे उपस्करों को खाली नहीं छोड़ा जा सकता और उनका प्रयोग सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए ताकि उससे सर्वाधिक लाभ उठाया जा सके। निष्पादन की प्रक्रिया के दौरान निर्णय लिया जाना, परियोजना की पूर्णता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह तकनीकी, प्रशासनिक या अन्य सम्बन्धित विषय पर हो सकता है। बारम्बार होने वाली कठिनाई को दूर करने के लिए, निर्णय के लिए समय निर्धारित करना चाहिए और एक निश्चित अवधि के बाद लम्बित नहीं रखना चाहिए। समय पर लिए गए निर्णय से लाभ होता है परन्तु देरी से कार्रवाई करने पर बुरा असर पड़ता है। कोई भी समिति या अधिकारियों का बोर्ड किसी तकनीकी विवरण पर निर्णय/समीक्षा वास्तविक निर्माण में आने वाली कठिनाईयों और उन कठिनाईयों के आधार पर बनाया जाता है जिनकी आवृत्ति की आशंका कार्य आरंभ होने से पहले होती है। समीक्षा निर्धारित समय के अनुसार होनी चाहिए। ऐसे किसी भी बोर्ड या समिति को और अधिक समय नहीं दिया जाना चाहिए। इससे कार्यस्थल पर सभी गतिविधियां सुचारू रूप से चल सकेंगी और परियोजना को समय पर पूरा किया जा सकता है।

राजमार्ग निर्माण प्रबंधन एक जरूरत

एक बार प्रशासनिक अनुमोदन दे दिए जाने के बाद विस्तृत सर्वेक्षण किया जाता है और विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार की जाती है। इसमें परियोजना के सभी विवरण दिए जाते हैं। मुख्य विवरण इस प्रकार से हैं।

(1) परियोजना का संक्षिप्त इतिहास

(2) निर्माण विवरण और परियोजना की समाप्ति का कार्यक्रम अवधि के साथ

(3) (लोंगिटूडिनल) देशान्तर और लम्बवत् समकोण (क्रॉस सेक्शन) विवरण

(4) खनन स्थल की अवस्थिति परियोजना के समीप होनी चाहिए ताकि टीला बनाया जा सके और पदार्थों को एकत्रित किया जा सके।

(5) सड़क के किनारे कार्य का सी बी आर मूल्य (CBR Value)।

(5) क्रॉस ड्रेनेज वर्कस, पुलिया और अन्य प्रमुख पुल का विवरण। प्रमुख पुल के मामले में अलग से डीपीआर बनाया जाना चाहिए ताकि सभी तकनीकी मानदण्डों को शामिल किया जा सके।

(7) महीनेवार निर्माण योजना और उसके आधार पर, आवश्यक संसाधन, वाहन, उपस्कर, संयंत्र, मानव संसाधन, निर्माण सामग्री और निधि की आवश्यकता का पता लगाना ताकि पूर्ण निर्माण कार्य स्पष्ट हो।

(8) एक बार उपरोक्त सभी पहलू डीपीआर के अनुसार स्पष्ट हो जाने के बाद क्रिटिकल पाथ मेथड (सी पी एम) जमीनी निर्माण योजना के आधार पर बनाई जाए, यह मानकर कि सभी प्रमुख उपस्कर और संयंत्रों का समुचित उपयोग होगा और कुल गतिविधियों में न्यूनतम फ्लोट होगा । इसके बाद कीर्तिमान स्थापित करने के लिए कार्यस्थल पर प्रबंधन को तेज करना चाहिए।

(9) प्रत्येक गतिविधि के लिए उपस्कर/संयंत्र की आवश्यकता उनकी रेटिड (Rated) क्षमता सहित और उनके समावेराण की अनंतिम अनुसूची जैसे :–

- टीला (अर्थवर्क)
- ग्रेनुलर सब बेस (जी एस बी)
- वेट मिक्स मैकाडम (डब्ल्यू एम एम)

- डेंस बिटुमिनस मैकाडम (डी बी एम)
- बिटुमिनस कोन्क्रीट (बी सी)

(10) प्रमुख संयंत्रों की समावेशण योजना उनकी क्षमता सहित जो परियोजना की समग्र समाहित के लिए महत्वपूर्ण है जैसे :–

- सिग्रीगेटर (Segregater)
- स्टोन क्रैशर (Stone Crusher)
- डब्ल्यू एम एम संयंत्र (WMM Plant)
- हॉट मिक्स प्लांट (HMP)
- बैचिंग प्लांट (Batching Plant)
- हयूम पाईप फैक्टरी यदि आवश्यक हो तो
- ब्रिज सूपरस्ट्रक्चर के लिए कास्टिंग यार्ड

(11) निर्माण कार्य की अनंतिम अनुसूची बना ली जाती है या आरम्भ में ही अनुमोदित हो जाती है, आगे परियोजना की प्रत्येक प्रमुख गतिविधि जैसे अर्थ वर्क, जी एस बी, डब्ल्यू एम एम, डी बी एम और बी सी की उपलब्धि को इंगित करने के लिए मेक्रो-स्तर और माइक्रो स्तर की योजना आवश्यक होती है।

योजना और अनुवीक्षा (Planning and Monitoring)-क्या किया जाना है और कितने समय में किया जाना है और उसका निष्पादन कैसे नियोजित समय में किया जा सकता है। सभी पक्ष-विपक्ष और सम्भावित कठिनाइयों की पूर्व अनुमानित अवधि में जांचना चाहिए। सभी मुख्य बिन्दुओं का रिकार्ड अधिकारियों के पास कार्य स्थल पर होना चाहिए जैसे :–

- राजमार्ग के लिए किसी विशेष संरक्षण का चयन क्यों किया गया।
- क्यों किसी विशेष अभिकल्प को प्रस्तावित किया गया।
- प्रस्तावित, तैयारी रेखाचित्र
- अद्यतन अनुमोदित रेखाचित्र
- पुलों के मामलों में बोर लाग के रूप में सोइल-स्ट्रेटा (Soil Strata) और सी बी आर मूल्य सड़क संरक्षण, सड़क के साथ परियोजना में पुल के लिए स्काउर निर्धारण का नमूना अध्ययन यदि पहले ही से कर लिया गया है।
- परियोजना के प्रमुख लक्षण और उसमें अंतर्निहित प्रत्येक वस्तु की मात्रा।
- सभी बैठकों का विवरण और अघतन निर्णय।
- किसी विवाद के मामले में निर्णय संबंधी प्रणाली, यानि डिस्प्यूट रेसोल्यूशन बोर्ड डी आर बी (DRB) को पहले ही अंतिम रूप दे दिया जाए।

निर्माण गतिविधियों का प्रबंधन

निर्माण प्रबंधन से राजमार्ग निर्माण प्रबंधन की यह जरूरत है कि वह सभी संसाधनों का प्रयोग इस प्रकार से करें ताकि परियोजना निर्धारित समय या लागत से अधिक न हो। निर्माण कार्य इस बात पर निर्भर करता है कि निर्माण गतिविधियों का कितनी अच्छी तरह से प्रबंधन किया गया है, जोकि प्रत्येक कार्य स्थल पर अलग अलग होता है। अनुभव के आधार पर कुछ निर्माण प्रबंधन हेतु विभिन्न पहलुओं की पहचान की जानी चाहिए। मुख्य उपलब्धियों और बार-चार्ट सहित क्रिटिकल पाथ मेथड के आधार पर निर्माण अनुसूची तैयार की जानी चाहिए। जहां कहीं भी आवश्यकता हो, आधुनिकतम सॉफ्टवेयर प्रबंधन का इस्तेमाल किया जा सकता है।

उपस्कर और संयंत्र प्रबंधन

उपस्कर/संयंत्र की आवश्यकता का निर्धारण पद्धति अनुसार किया जाना चाहिए और तद्नुसार किसी विशेष परियोजना के लिए उसे मुहैय्या किया जाना चाहिए।

- सभी वस्तुओं के कार्य की प्रमात्रा विनिर्देशन विशिष्ट सहित
- कार्य के लिए उपलब्ध समय
- उपस्करों का विवरण और जाब की स्थिति अनुसर न्यूनतम आवश्यकता
- उपस्कर/संयंत्र की मूल्यांकित क्षमता
- निर्धारित क्षमता
- रख-रखाव की अनुसूची
- आवश्यक अतिरिक्त पुर्जों की वस्तुसूची
- उपस्कर/संयंत्र की मरम्मत

अभिन्यास को सामग्री, उपस्कर और कार्मिकों की सर्वाधिक आवाजाही से सुनिश्चित करना चाहिए। यह एक आवश्यक शर्त है किसी उपस्कर के प्रचालन के लिए। समर्थक सुविधाएं जैसे जनरेटर, ऑफिस, भण्डार को धूल और प्रवाह की राह में नहीं होना चाहिए। सेवा सड़क का रख-रखाव ठीक प्रकार से करना चाहिए। उपस्कर के प्राप्ति एवं प्रेषण को उचित प्रारूप में रखना चाहिए ताकि उसके इस्तेमाल के विवरण को कार्यस्थल में रखा जा सके। आवश्यकतानुसार उपस्कर के रख-रखाव और मरम्मत की सुविधाएं आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए होनी चाहिए।

आमतौर पर प्रमुख राजमार्ग परियोजना उपस्कर उन्मुख होती है जैसे कि कितने उपस्कर काम में लगाए गए जैसे–स्टोन क्रैशर, हॉट मिक्स प्लांट, वेट मिक्स प्लांट, बैचिंग प्लांट। अतिरिक्त उपस्कर की उपलब्धता पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है इस बात के साथ कि यदि कोई समस्या हो तो अतिरिक्त उपस्कर को उपलब्ध करने में कितना समय लगेगा। इससे उपस्कर के काम में न लाए जा सकने वाले समय में कटौती करने में मदद मिलती है। पिछले अनुभव से कटौती करने में मदद मिलती है। पिछले अनुभव के आधार पर प्रारंभिक खरीद के दौरान अतिरिक्त उपस्करों की आवश्यकता का अनुमान लगाया जाना चाहिए। यदि मामला ठीक न लगता हो तो मूल उत्पादक के साथ उस उपस्कर का वार्षिक रख-रखाव आयोजित किया जा सकता है ताकि संयंत्र का बेहतर उपयोग किया जा सके। यह लागत को कम कर सकता है। परन्तु अन्य उपस्करों के लिए इस विस्तृत ढंग से किया जाना चाहिए।

सामग्री प्रबंधन

सामग्री प्रबंधन परियोजना के आरंभ से समानान्तर गतिविधि है। इसमें कैम्प सामग्री, कार्यालय उपस्कर प्रमुख वस्तुओं जैसे एग्रीगेट्स, बालू, सीमेंट, स्टील, ढांचागत स्टील, शटरिंग उपभोग्य, बिजली फिटिंग आदि का प्रापण शामिल है। विभिन्न वस्तुओं की माहवार लागत और मात्रा का अनुमान कम से कम तीन से छः महीने पहले निर्माण योजनानुसार किया जाना चाहिए। तथा इसकी समीक्षा नियमित रूप से की जानी चाहिए। सी पी एम के आधार पर निर्माण कार्यक्रम को अंतिम रूप दिए जाने पर एक मेथड स्टेटमेंट को अंतिम रूप दिया जाता है क्योंकि आगे काम आने वाली सामग्री का अनुमान लगाना आसान हो जाता है। तद्नुसार सामग्री की चूरण करने के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं।

(क) क्रैशर के उत्पादन समय सारणी के अनुसार आकार-बार एग्रीगेट की उपलब्धि।

(ख) निर्माण कार्य योजना के अनुसार एग्रीगेट की आवश्यकता।

इसी प्रकार से सप्ताहों के लिए बिटुमिन और डीजल/पेट्रोल की आवश्यकता का पता लगाया जा सकता है। कार्यस्थल की आवश्यकतानुसार बिटुमिन का इस्तेमाल ड्रम में साथ, हो सकता है या बड़ी मात्रा में भण्डारण किया जा सकता है। ड्रम के मामले में हॉट मिक्स प्लांट में घोलने की व्यवस्था की जांच की जा सकती है क्योंकि यह महत्वपूर्ण हो सकता है । इसी तरह से कार्यस्थल की तैयारियों के अनुसार बिटुमिन के भंडारण को अंतिम रूप दिया जा सकता है । बिटुमिन का भण्डारण ड्रम (Bulb) के भण्डारण से आसान है और कार्य प्रगति को तेज किया जा सकता है बशर्ते कि बिटुमिन भण्डारण कार्यस्थल के नजदीक हो। डीजल पेट्रोल की दैनिक आवश्यकता का अनुमान पहले से ही लगाया जाना चाहिए और तद्नुसार, तैयारियां की जानी चाहिए।

वित्तीय प्रबंधन

किसी भी परियोजना या परियोजना प्रबंधन का इसके बिना कोई अर्थ नहीं होगा। प्रबंधन को अपना बजट माहवार

तय करना चाहिए और उसका आधार होना चाहिए पहले किया गया काम या न्यूनतम कार्यस्थल की आवश्यकता। वित्तीय योजना को आंकना इस बात पर निर्भर करता है कि सही समय पर उपयुक्त उपाय किए जाएं ताकि प्रत्येक लगाई वस्तु से अधिकतम लाभ उठाया जा सके और पूंजी निवेश न्यूनतम स्तर रखा जाए। उच्च प्रबंधन स्तर पर यह आवश्यक है कि यदि इनपुट और आउटपुट प्रारंभिक दौर के अलावा एक दूसरे से मेल नहीं खाते हैं, जॉब की पूर्ण समीक्षा की जानी चाहिए और पूरी योजना और निर्माण समय सारणी को पुनर्नियोजित किया जाना चाहिए। निर्माण कार्य के आधार पर योजना स्तर पर निधि की मासिक, वार्षिक आवश्यकता को अंतिम रूप दिया जाना चाहिए ताकि उच्चतर प्रबंधन को तद्नुसार निधि की आवश्यकता बताई जा सके।

गुणवत्ता प्रबंधन

गुणवत्ता निर्माण स्थल पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण गतिविधि है और प्रबंधन को सदा इसमें सुधार करने की कोशिश करनी चाहिए। गुणवत्ता नियंत्रण उपायों के बारे में स्टाफ को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि इस संबंधी अघतन जानकारी मिल सके और उसे कार्य नीति का एक हिस्सा बना लिया जाना चाहिए। बालू एग्रीग्रेट, बिटुमिन और कंक्रीट गुणवत्ता जांचने के लिए कार्यस्थल पर एक प्रयोगशाला स्थापित की जानी चाहिए। जांच का विश्लेषण जॉब के आकार के आधार पर किया जाना चाहिए। मिश्र अभिकल्प (मिक्स-डिजाइन) नवीनतम कोड के अनुसार और वांछित शक्ति का तैयार किया जाना चाहिए। कंक्रीट को अंतिम रूप दिए जाने से पहले उसके सुदृढ़ीकरण पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। आई आर सी (IRC) और एम ओ आर टी एंड एच (MORTH) द्वारा जारी आधुनिकतम दिशा निर्देश को सुनिश्चित किया जा सके । निर्माण स्थल पर गुणवत्ता सुनिश्चित करने से ढांचों की सुंदरता को सुधारा जा सकता है । इसी तरह से बालू के निम्नग्रेड सुदृढ़ीकरण के लिए गुणवत्ता परीक्षा, डब्ल्यू एम एम और डी बी एम के लिए जॉब मिक्स फार्मूला और कंक्रीट के लिए मिक्स डिजाइन हो ताकि निर्माण सामग्री का समुचित उपयोग किया जा सके। गुणवत्ता के लिए अतिरिक्त धन की आवश्यकता नहीं होती, उसके लिए अधिकारियों की व्यक्तिगत दिलचस्पी आवश्यक होती है। ''गुणवत्ता कभी भी अचानक ही नहीं हो जाती, वह हमेशा हमारे अच्छे प्रयासों का परिणाम होती है, बेहतर काम करने की केवल इच्छा शक्ति होनी चाहिए।''

संरक्षा प्रबंधन

सुरक्षा कोड का निर्माण स्थल पर कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। निर्माण स्थल के खतरों के अनुसार सभी कर्मियों को हिदायत दी जानी चाहिए जिन गतिविधियों के लिए ड्रिलिंग और ब्लास्टिंग की आवश्यकता नियमित रूप से पड़ती है, सभी कार्मिकों के पास संरक्षा उपकरण होने चाहिएं। संयंत्र चालू करते समय और ब्लास्टिंग ऑपरेशन के दौरान संकेत पद्धति का समावेशण अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए ताकि बेहतर सम्प्रेषण हो सके। सूपरस्ट्रक्चर की शटरिंग के समय भी संरक्षा प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है। पहले ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं जहां शटरिंग/स्टेजिंग के ढह जाने से मौतें हुई थी। इसलिए सूपरस्टक्चर बनाने से पहले इसकी रोकथाम के उपाय किए जाने चाहिए। यदि स्टेजिंग व्यवस्था के लिए स्टील ट्रस का उपयोग किया जाता है तो अभिकल्प और लॉचिंग व्यवस्था को अच्छी तरह से जांचा जाना चाहिए।

प्रलेख प्रबंधन

निर्माण-कार्य के दौरान प्रलेख प्रबंधन अपने आप में एक कला है। प्रलेख को उचित और पद्धति अनुसार रखा जाना विभाग और ठेकेदार दोनों के लिए अत्यंत आवश्यक है। दोनों पार्टियों द्वारा विवरण को अच्छी तरह से जांचना चाहिए। अच्छे प्रलेखीकरण से कार्य के दौरान और कार्य की समाप्ति पर विवाद और माध्यस्थाम् मामलों को रोका जा सकता है। इसके लिए दोनों ओर के प्रबंधकों को विशेष ध्यान देना चाहिए। मध्यस्थ तक जो मामले पहुंचते हैं इनमें अधिकांश का कारण आपसी समझ न होना और अनुचित प्रलेखीकरण होता है। जॉब की स्थिति के मूल्यांकन के लिए नियंत्रण प्राक्कलन का तैयार किया जाना आवश्यक है। इसमें अभी तक किए गए कार्य और बाकी बचे कार्य का विवरण होना चाहिए। यह निर्माण कार्य की समाप्ति तक जॉब की प्रगति के लिए मार्ग दर्शक सिद्धांत होगा। जैसे-जैसे परियोजना प्रबंधन विकसित हुआ है, प्रलेखीकरण एक

3531 SRTH/08—9A

महत्वपूर्ण हुनर बन गया है जैसे खासतौर पर तब जब परियोजनाएं और अधिक जटिल और कठिन हो रही है। नियोजित प्रलेखीकरण दावों के खिलाफ सबसे अच्छा तरीका है जिन प्रलेखों का प्रत्येक प्रबंधन को निपटारा करना होता है वे हैं–

- प्रस्ताव और बोली प्राक्कलन-वे प्रलेख बताते हैं किस तरह से परियोजना के निर्माण और उनकी योजनाएं परिकल्पित हुईं। इसमें लागत और निर्माण विधियों संबंधी जानकारी होती है।

- परियोजना अनुसूची–यह किसी भी परियोजना में सबसे कम ध्यान दिए जाने वाला रिकार्ड है और दावों की स्थिति में यह सर्वोच्च प्रलेख उपलब्ध करवा सकता है। मूल बेसलाइन अनुसूची से परियोजना में होने वाली देरी या अनदेखी रुकावटों के प्रभावों को मॉनीटर किया जा सकता है यदि मूल से बदलाव करना है तो उसे प्रलेखित किया जाना चाहिए और मूल कार्य संभाव्य आवश्यकता से अलग किया जाना चाहिए। दैनिक रिपोर्ट, टाइम शीट, पत्राचार के पत्र, बैठकों के कार्यवृत्त या पार्टियों के बीच, कोई अन्य प्रलेखों करारों संबंधी कागजात तुरंत उपलब्ध होने चाहिए।

कार्मिक प्रबंधन

प्रबंधन को इंजीनियरों को उन गतिविधियों को सौंपना चाहिए, जिन्हें वे बेहतर ढंग से पूरा कर सकते हैं। व्यक्तिगत गुणवत्ता का अध्ययन किया जाना चाहिए और उसके बाद ही इंजीनियरिंग, प्रशासनिक और लेखा स्टाफ को कार्य सौंपना चाहिए। प्रबंधन को एक अच्छा मनोवैज्ञानिक होना चाहिए और कार्मिकों के कार्य रुझान के अनुसार काम सौंपना चाहिए। कार्मिक क्या कर सकता है उससे ये जानने के लिए समुचित कार्रवाई होनी चाहिए। एक बार निर्णय की जानकारी सबको हो जाती है तब प्रबंधक द्वारा मुख्य गतिविधियों का निपटारा सोच समझकर किया जाना चाहिए। इस बात का भी ख्याल रखना चाहिए कि नए कार्मिकों को उपयुक्त कार्य पर लगाया जाए।

निष्कर्ष

निर्माण प्रबंधन मूलत: निश्चित राशि और निश्चित समय में किसी परियोजना को प्रभावशाली ढंग से पूरा करने का तरीका है। प्रबंधक को परियोजना की सभी गतिविधियों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। निर्णय ठेकेदार और मुअक्किल दोनों के मामले में शीघ्र और समयबद्ध होना चाहिए वरना परियोजना पूर्ण होने में देर हो जाएगी जिससे समय और लागत अधिक लगेगी। पुनरीक्षित मॉनिटरिंग के रूप में नियंत्रण से बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है जिससे परियोजना में प्रगति दिन दूनी और रात चौगुनी हो सकती है।

–अधीक्षण अभियंता (सिविल)
मुख्यालय 13 सीमा सड़क कृतिक बल
पिन-930013
द्वारा 56 सेना डाकघर

3531 SRTH/08—9B

तेरहवीं

सुरेन्द्र कुमार

शायद ही किसी बात पर आज तक दोनों समधिनें एक मत हुई हों, किन्तु आज दोनों एक बात पर एक दूसरे के विचार से पूर्णतया सहमत थीं। बात थी उनकी दूसरी नातिन का जन्म । एक अपनी बेटी को कोस रही थी तो दूसरी अपनी बहु को। दोनों का विचार था कि दूसरी बच्ची होने से पहले ही उनका गर्भ गिरा देना चाहिए था।

लड़की की मां बोली, ''बहन जी, आप तो समझदार हैं आपने इनको क्यों नहीं समझाया''।

''मैंने तो इन्हें बहुत समझाया कि समय रहते जांच करवा लेनी चाहिए, ताकि बाद में पछताना न पड़े, किन्तु मेरी सुनता कौन है, दोनों एक साथ कहने लगे कि आजकल तो यह गैर कानूनी है।''

''गैर कानूनी!'' लड़की की सास ने अभी तक बात पूरी भी नहीं की थी कि लड़की की मां ने बीच में ही रोक दिया और थोड़ा गुस्सा दिखाते हुए कहा, ''इस देश में हर कानून तोड़ने के लिए बनता है। बस चाहिए तो केवल पैसा। यदि कोई कमी थी तो हमें कह दिया होता, हम भिजवा देते,''।

"पैसा-पैसा तो यहां पर पानी की तरह बहाया गया। पंडित ज्योतिषी, पीर, फकीर आदि सभी पर खूब खर्चा किया गया। इसके अतिरिक्त वैद्य, हकीम, डॉक्टर सभी से दवाईयां लीं। सभी ने पूरा विश्वास दिलाया था कि इस बार लड़का ही होगा।" लड़की की सास भी थोड़ा जोश में आते हुए बोली।

''इतने काम करवाए उनका क्या लाभ हुआ। यदि ढंग का एक ही काम करवा लिया होता तो आज यह दिन देखना न पड़ता।''

लड़की की मां कुछ और बोल पाती इससे पहले ही हलवाई के पास काम करने वाला लड़का मलमल का कपड़ा मांगने के लिए आ गया और लड़की की सास दूसरे कमरे से कपड़ा लेने के लिए चली गई एवं इस वार्तालाप को झगड़ा बनने से पहले ही विराम मिल गया।

चरणजीत शाह जो शाह जी के नाम से घर और बाहर सभी जगह मशहूर थे, के तीसरे सबसे छोटे लड़के के घर में आज से तेरह दिन पहले दूसरी लड़की का जन्म क्या हुआ था, घर में कोहराम सा मच गया था। लड़के के संबंधी हो या लड़की के सभी बच्ची के माता-पिता का समय पर चेकअप न करवाने के लिए कोस रहे थे। उनकी सभी दलीलों को नकार दिया जाता।

इस मामले में औरतें-पुरुषों से अधिक भाग ले रही थीं और लड़की की पहचान होने पर बच्चा गिरवाने का अपना अनुभव सुना रही थी। पुत्र प्राप्ति के लिए किसी ने एक तो किसी ने इससे भी अधिक भ्रूण की हत्या कर दी, किन्तु किसी के चेहरे पर इस बात के लिए कोई गम नहीं था। शायद ही कोई ऐसी औरत हो जो कि इस काम से बची हो। एक औरत अपने साथ अपनी पांच वर्षीय नातिन को साथ लाई थी। वह भी बता रही थी कि किस प्रकार जब उसकी बेटी के पेट में दूसरी बार भी जांच करने पर लड़की पाई गई और डॉक्टरों ने जान को खतरे में देखते हुए बच्चा गिराने से मना कर दिया था तब उसी की जिद पर उसकी लड़की का आप्रेशन हुआ था जिसमें कि उनकी मृत्यु भी हो गई थी। उनके दामाद ने अपनी पत्नी की मृत्यु के दो मास बाद ही दूसरी शादी करवा ली थी, वह अब अपनी नातिन को पाल रही थी। उसे अपनी बेटी की

मृत्यु के गम से अधिक इस बात की खुशी थी कि उसने अपनी लड़की की दूसरी बच्ची को इस दुनियां में आने से पहले ही रोक लिया था।

सबसे विचित्र स्थिति तो इस समय लड़की के पिता की थी। वह वैदिक विचारों के व्यक्ति थे और अपने शहर की भ्रूण हत्या विरोधी संस्था के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। साप्ताहिक सत्संग के अंत में होने वाली राष्ट्रीय प्रार्थना में वह ऊंचे स्वर में गाते थे ''आधार राष्ट्र की हो नारी सुभग सदा ही'' वह ऊपर से तो चुप थे किन्तु धीमे स्वर में उन्होंने भी अपनी बेटी से कहा था कि इस समय इतना दु:ख उठाने से तो अच्छा था कि पहले ही चेकअप करवाकर गर्भ गिरा दिया होता।

चरणजीत शाह ने तो ऐसे गम लगा लिया था कि जैसे उनके छोटे बेटे का वंश ही समाप्त हो गया हो। पंजाब के बटबारे के बाद अपने परिवार के साथ जब वह इस शहर में आए थे तो उनकी उम्र केवल दस वर्ष की थी। उनकी दो बड़ी बहने थीं और वह अपने माता-पिता के अकेले पुत्र थे। उनके पिता कपड़े की फेरी लगा कर घर का खर्च चलाते थे । पाकिस्तान में छोड़े गए घर की जगह उन्हें एक पुराना किन्तु बड़ा घर मिल गया था। आठवीं में फेल होने के बाद चरणजीत शाह ने अपने पिता के साथ कपड़े का काम शुरू कर दिया। उन्होंने शहर के मुख्य बाजार में एक छोटी सी दुकान ले ली थी। खुला बाजार था और दुकानों के पीछे भी खाली जगह थी। दूसरों की तरह उन्होंने भी पीछे पड़ी खाली जमीन पर कब्जा कर लिया और अपनी दुकान को बढ़ा लिया। लड़ाकू किस्म के थे चरणजीत शाह ओर उनके चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूंछे उनके चेहरे को ओर रोबदार बना देती । शराब पीकर जब वे ऊंची आवाज में चिल्लाते तो आस-पास के दुकानदार थर-थर कांपने लगते। इस बात का उन्हें फायदा भी हुआ क्योंकि उनके आस-पास के दुकानदार उन्हें अपनी दुकानें सस्ते में ही बेचकर चले गए। इस तरह उन्होंने अपने पिता के साथ मिलकर उस छोटी सी दुकान को एक विशाल शोरूम में बदल लिया था एवं अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् अकेले पुत्र होने के नाते उस शोरूम के अकेले वारिस बने।

जहां तक चरणजीत शाह की घेरलू जिन्दगी का संबंध था उसी शहर के एक छोटे से व्यापारी की लड़की से उनका विवाह हुआ। हर दो वर्ष के बाद उनके यहां पर एक पुत्र जन्म लेता और इस प्रकार उनके यहां चार पुत्रों ने जन्म लिया। चार पुत्रों के जन्म के पश्चात् तो शाहजी के पांव जमीन पर न पड़ते। बात-बात पर अपने लम्बी और ऊंची उठी हुई मूंछों को बल देकर कहते कि जिसके चार पुत्र हों उसका इस संसार में किसी दूसरे की क्या आवश्यकता है अंत समय में भी जब शमशान घाट ले जाएंगे तो किसी दूसरे की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इसके बाद उनके यहां एक लड़की ने जन्म लिया। चार लड़कों के बाद एक लड़की का जन्म तो बड़े हर्ष का विषय माना जाता है एवं चरणजीत शाह बड़े गर्व से कहते थे कि जब बच्चों ने राखी बंधवाने के लिए बहन की मांग की तो मैंने उनके लिए एक बहन पैदा कर दी।

समय के साथ-साथ चरणजीत शाह की संपन्नता में भी वृद्धि होती गई। मकान भी तुड़वा कर नया बनवा लिया एवं दुकान पर भी एक मंजिल और बना कर उसे बड़ा बना दिया था, क्योंकि उन्हें पता था कि उनके बेटे दुकान चलाने के अतिरिक्त कोई अन्य काम नहीं कर सकते। इसी बीच उन्हें एक धक्का पहुंचा जब उनका दूसरे नम्बर का बेटा एक स्कूटर दुर्घटना में मारा गया। उसकी मृत्यु के पश्चात् वह कुछ धार्मिक प्रवृत्ति के बन गए थे। वह अब माता के भक्त बन गए थे जहां पहले वह बिना नागा रोज शराब पीते थे वहां अब वह नवरात्रों में इसे छूते तक नहीं थे। इसके अतिरिक्त नवरात्रों में उन्होंनें अंडा-मीट, मछली आदि का सेवन भी बंद कर दिया था। वह वर्ष में एक बार वैष्णों माता की पवित्र गुफा की यात्रा करके आते एवं यात्रा से आने के बाद घर में कम से कम सात कंजकें अवश्य बैठाते। उन बच्चियों के पांव धोते और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते। इस कार्य से उनके मन को बड़ा सकून मिलता।

चरणजीत शाह के लड़के अधिक नहीं पढ़े। कोई दसवीं पास करके और कोई कॉलेज में, एक दो साल जाकर दुकान पर बैठ गया। केवल लड़की ही एम.ए. तक पढ़ी। इसके बाद लड़कों की शादी का दौर शुरु हुआ। पहले बड़े लड़के की शादी को अभी एक वर्ष भी नहीं बीता था कि घर के झगड़ों से तंग आकर उसे ऊपर एक अलग हिस्सा बना कर अलग करना पड़ा।

इसी प्रकार दूसरे लड़के की शादी को अभी छः मास भी नहीं गुजरे थे कि उसे भी ऊपर उसके लिए अलग हिस्सा बनाना पड़ा। इसके बाद उन्होंने बेटी की शादी की और वह अपने ससुराल चली गई। लड़की के ससुराल जाने के पश्चात् वह अपने आपको अकेला महसूस करने लगे थे। उसके अतिरिक्त दोनों पति-पत्नी की उम्र भी काफी बढ़ चुकी थी। इसलिए उनकी तीव्र इच्छा थी कि छोटे लड़के की शादी के बाद उसे अपने साथ रखेंगे ताकि उनके पास उनकी देखभाल करने वाला तो कोई हो। इसके बिल्कुल विपरीत जहां पहली बहुओं ने कुछ मास के पश्चात् अलग होने का बवाल खड़ा किया था वहीं पर जब सबसे छोटी बहु को यह भनक पड़ी कि उसके सास-ससुर उसे अपने पास रखने के इच्छुक हैं तो उसने भी अलग होने की रट लगानी शुरु कर दी और चरणजीत शाह को तंग आकर उसे भी अलग करना पड़ा। सबसे ऊपरी मंजिल पर उसके लिए भी दो कमरों का सेट बनवाना पड़ा। इस तरह चरणजीत शाह के न चाहते हुए भी उस घर का बंटवारा हो गया। सबसे नीचे चरणजीत शाह अपनी पत्नी के साथ रहते। उसके ऊपर दोनों बड़े लड़के और सबसे ऊपर वाली मंजिल पर सबसे छोटा लड़का।

समय के बढ़ने के साथ-साथ उनकी उम्र भी बढ़ने लगी और बुढ़ापे की बीमारियों ने उन्हें आ घेरा। जहाँ उनकी पत्नी को जोड़ों का दर्द रहता वहीं पर उन्हें दिल की बीमारी लग गई। हालांकि डॉक्टरों ने उन्हें पीने से मना कर दिया था इस पर भी वह बिना नागा पीते। अन्तर इतना था कि अब उसकी मात्रा कम कर दी। अब उनके पोते पोतियां भी बड़े हो गए थे। सबने अपने अलग-अलग स्कूटर रखे थे और बच्चों की जिद पर चरणजीत शाह को एक कार भी लेनी पड़ी। हालांकि कार की गैरेज के लिए उन्हें आंगन में से जगह निकालनी पड़ी। रात को नीचे कार और स्कूटरों का ऐसा तांता लगता कि जैसे कोई पार्किंग पलेस हो और उनके पीछे यह पति-पत्नी चौकीदार की तरह रह रहे हों।

चरणजीत शाह ने बच्चों के संबंध में जितने भी सपने संजोए थे सब उनसे उल्टे निकल रहे थे। लड़के जिन्हें यह बुढ़ापे का सहारा समझे बैठे थे उल्टे विपदा का कारण बने हुए थे। छोटी-छोटी बातों में उनका युद्ध शुरु हो जाता। कभी मकान का बंटवारा करते तो कभीं दुकान का। पिता का जिंदा होना उनके लिए कोई मायने नहीं रखता था। घर में स्कूटर खड़ा करने तक पर झगड़े हो जाते। बाहर किसी जगह जाना हो तो कार की चाबी खींचते पर जब उनकी बीमारी पर डॉक्टर की दुकान पर जाना हो तो जब एक दूसरे की ओर कार की चाबी फेंकी जाती। जब चरणजीत शाह या उनकी पत्नी कभी ज्यादा बीमार हो जाते तो शीघ्र ही लड़की को बुला लिया जाता एवं वह उनकी सेवा करती और अपने भाईयों को भी समझाती किन्तु हर बड़ी बीमारी पर उसे ही आना पड़ता।

दुकान पर भी उन भाईयों का बुरा हाल था। तीनों काम में ज्यादा दिलचस्पी नहीं लेते थे। किन्तु जब कभी किसी के हाथ कोई पैसा लग जाता तो वह उसे अपने पास रखने में न कतराता। जब कभी चरणजीत शाह किसी काम से बाहर जाते तो दुकान की बिक्री आधी रह जाती। उन्हें डर रहता कि यदि वह दुकान पर न जाए तो कहीं उनके जीते जी यह दुकान को ही न बेच दें। इसलिए बुढ़ापे में भी उन्हें रोज दुकान पर जाना पड़ता था। उन्होंने सुना था कि लड़के बुढ़ापे में मां-बाप का सहारा बनते हैं, किन्तु वह देख रहे थे कि सत्य कुछ और ही है। कोई भी लड़का उनकी दिल से सेवा नहीं करता। फिर भी उन्हें उनसे मोह था। क्योंकि उन्हें यह भी पता था कि मृत्यु के बाद अन्त्येष्टि और श्राद्ध केवल लड़के ही कर सकते हैं जिससे की मुक्ति मिलती हैं। शायद इसीलिए वह अपने सबसे छोटे लड़के की दूसरी बेटी होने पर उदास थे और लगातार पिछले बारह दिन से इस गम को मिटाने के लिए पी रहे थे। आज उस बच्चे को पैदा हुए तेरहवां दिन था। उस पंजाबी क्षत्रिय परिवार में तेरहवें दिन लड़की को नया कपड़ा पहनाने की रस्म अदा की जाती। लड़कों के लिए यह रस्म इक्कीसवें या इकतीसवें दिन या किसी भी शुभ दिन को ही की जा सकती थी। वैसे उस परिवार में किसी की मृत्यु होने पर शोक का अंत भी तेहरवें दिन किया जाता था। जिसे तेरवहीं की रस्म कहा जाता है। उनके परिवार किसी बड़े नहीं शायद लड़की का पैदा होना भी एक शोक माना हो एवं इसीलिए तेरहवें दिन ही लड़की को नया कपड़ा पहना कर शोक का अंत किया जाता हो।

चरणजीत शाह के घर में भी आज यही रस्म होनी थी और उसी से दोनों समधिनों के बीच यह तकरार

हुई थी। घर के नजदीक के सगे संबंधियों को बुलाया गया था। हलवाई भी लगाए गए थे और शामियाना भी लगवाया गया था किन्तु सभी कुछ बड़ी शांति से चल रहा था। सबसे विचित्र स्थिति उस बच्ची के माता-पिता की थी। वे ऐसे एक ओर खड़े थे जैसे कि उन्होंने कोई बहुत भयानक अपराध कर दिया हो। आज से वर्षों पहले इस देश में एक राजा कंस हुआ था जिसने कि अपनी बहन की बच्ची को पैदा होते ही इसलिए मार दी कि उसे यह भय था कि वह बड़ी होकर उसकी मृत्यु का कारण बन सकती है। आज न जाने कौन सा ऐसा भय इस समाज में फैला हुआ है कि लड़के के माता-पिता लड़की के पैदा होने से पहले ही गर्भ में ही उसे मरवा देते हैं। विचित्र बात है कि उस समय के राज कंस को बड़ा क्रूर राजा माना गया है किन्तु आज वर्षों बाद, बच्ची के पैदा होने से पहले ही उसकी हत्या करने वाले माता-पिता समाज में प्रतिष्ठा पाते हैं और जिस माता-पिता ने उसे जन्म दिया है वह अपराधियों की तरह कटघरे में खड़े हैं।

तभी वहां पूजा अर्चना आदि के लिए पंडित जी आ गए। उन्होंने माता-पिता को बच्ची समेत पूजा पर बैठने के लिए कहा। अन्दर पालने में जहां बच्ची सो रही थी उसकी मां लेने के लिए गई तो सभी को एक हृदय विदारक चीख सुनाई दी। सभी परिवार वाले भागे हुए आए और उन्होंने देखा कि बच्ची की मां उसे सीने से चिपटाए रो रही थी। जब दूसरों ने उसे छूकर देखने की कोशिश की तो उन्हें पता चला कि मां अपनी छाती से निर्जीव शरीर को चिपकाए हुए है। शायद वह बच्ची अपने इस घर में आने से दूषित हुए वातावरण को ज्यादा देर तक सहन न कर सकी और अपनी पारिवारिक परम्परा निभाते हुए उस तेरहवें दिन परिवार में छाए शोक का अंत कर गई।

–कार्या:महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

हरियाणा, चंडीगढ़

परिधि

आशमा कौल

नहीं-नहीं
मुझे इतनी ऊंचाई पर
खड़ा मत करो
जहां से मुझे हर चीज में
बौनेपन का आभास होने लगे
जिस मिट्टी से बनी हूँ मैं
कहीं उसे सिर्फ
मिट्टी न समझने लगूँ
आदत है मुझे स्वच्छन्द फिरने की
सबसे मिलने की
कहीं यह ऊंचाई
मेरी स्वच्छन्दता छीन न ले
मैं कैद नहीं होना चाहती हूँ
बुलन्दी की दीवारों में
तालियों की हथकड़ियों में
और वाहवाही की सलाखों में।

इस ऊँचाई पर
मेरा दम घुटने लगा है
न जाने गगन को छूते हुए भी
हवा मुझसे दूर कैसे है
न जाने यह सुन्दर फूल
मेरे गले को
बार-बार क्यों डसते हैं
हर एक पल मुझे
शताब्दी-सा लम्बा
नज़र आता है
और इस पल की शताब्दी में
न जाने कितनी बार
मेरे अन्दर के मानव को
एक अजीब-सी कसमसाहट
निगल जाती है
मैं चीखना-चिल्लाना चाहती हूँ
किन्तु विवश हो जाती हूँ
मेरी बुलन्दी
ऐसा करने से रोकती है मुझे
क्योंकि समाज में ऊँचा स्थान है मेरा
लोगों को बहुत आशाएँ हैं मुझसे।

वे लोग
जो छोड़े जा रहे हैं मुझे
इस गर्म रेत पर अकेले
शायद इस ख्याल से
कि मैं कदमों के निशान छोड़ जाऊँगी
आने वाली पीढ़ी के लिए
नहीं जानते कि मेरे पैरों में
कितने छाले पड़ चुके हैं
अब सिर्फ़ रेंग सकती हूँ मैं।

उठने के लिए
किसी का सहारा
भी नहीं रहा
ये लोग अनजान हैं इससे
कि अकेले रहना कितना मुश्किल है।
साँय-साँय करती
यह रेतीली आँधी
इस सुनसान रेगिस्तान में
मुझे निगल जाएगी
इन दायित्वों की
ऊंचाई के बोझ तले
मैं टूट रही हूँ
मैं ऐसी फतह की
लालसा नहीं करती
जो मुझे अपनों से

अलग कर फेंके
जिन्होंने मुझे चलना सिखाया
उनके सर पर खड़ा कर दे
इस फतह के बदले
मुझे वह शिकस्त मंजूर है
जो अपनों के
साथ रहने पर
मुझे मजबूर कर देगी
इसीलिए मैं
कहती हूं मुझे
इन रेगिस्तानी ऊँचाइयों
पर अकेला मत छोड़ो
यहाँ मेरा दम घुटता है
वापिस जगह दे दो
मुझे इस भीड़ में
मैं इन बुलन्दियों की माँग
अब नहीं करूँगी
एक बार सिर्फ एक बार
मुझे वापिस उस
मिट्टी में ले चलो
जिससे मेरा जन्म-जन्म का रिश्ता है
जहां मैं एक बार
फिर से खुलकर
अपनी खोई हुई
सांसें ले सकूँ
उस असहनीय ऊँचाई
की परिधि के आसपास
आराम से जी सकूँ।

□ □ □

–मकान नं. 26651,
सैक्टर-16,
फरीदाबाद, हरियाणा

नई विश्व भाषा-ग्लोबिश

राकेश कुमार

यह सर्वविदित है कि इंग्लैंड में बोली जाने वाली भाषा अंग्रेजी है और फ्रांस में बोली जाने वाली भाषा फ्रेंच है। फ्रेंच बोलने वाले 85 प्रतिशत लोग फ्रांस में ही रहते हैं । ये लोग ही फ्रेंच के सही जानकार हैं और फ्रेंच भाषा के सही और गलत प्रयोग के बारे में अधिकार- पूर्वक बता सकते हैं। लेकिन यह स्थिति अंग्रेजी के बारे में नहीं है। अंग्रेजी भाषा स्कॉटलैंड में भी बोली जाती है, आयरलैंड में भी और वेल्स में भी। इन तीनों क्षेत्रों के लोगों द्वारा अधिकारपूर्वक इसका प्रयोग किया जाता है, परन्तु इन तीनों ही क्षेत्रों की अंग्रेजी में बहुत अंतर है। यानि इंग्लैंड में बोली जाने वाली अंग्रेजी में भी एकरूपता नहीं है। ऐसी स्थिति में, हम विश्व के अनेक देशों में बोली जाने वाली अंग्रेजी की एकरूपता की कल्पना भी नहीं कर सकते।

विश्व के प्रत्येक देश में बोली जाने वाली अंग्रेजी वहां के स्थानीय प्रभाव से बच नहीं सकी है और ऐसा होना संभव भी नहीं है। वस्तुत: आज अमेरिका में बोली जाने वाली अंग्रेजी, मूल ब्रिटिश अंग्रेजी से बहुत भिन्न है। अमेरिकी अंग्रेजी में अनेक प्रयोगों में शब्दों की स्पेलिंग को भी संक्षिप्त रूप प्रदान किया गया है। उदाहरणार्थ, इंग्लैंड में रंग के लिए Colour और अमेरिका में Color तथा कार्यक्रम के लिए इंग्लैंड में Programme और अमेरिका में Program स्पैलिंग का प्रयोग किया जाता है। यानि जिन अक्षरों की आवश्यकता नहीं है, उन्हें छोड़ने में कोई बुराई नहीं है। विश्व की अन्य भाषाओं की तुलना में अनेक देशों में अंग्रेजी का प्रभाव अधिक ही है। ब्रिटिश साम्राज्य दुनिया के अधिकतर देशों पर रहा है ऐसे देशों में अंग्रेजी अभी भी बहुतायत से बोली जाती है जिसमें भारत भी एक है।

यह वर्तमान संदर्भ में बहुत हद तक सत्य है कि अंग्रेजी से दुनियाभर में संपर्क साधा जा सकता है दुनिया में संप्रेषण की भाषा, व्यापार की भाषा, संचार की भाषा अंग्रेजी ही है अपवादस्वरूप फ्रांस, कोरिया और जापान जैसे देशों को छोड़कर। हालांकि सीमित रूप में अंग्रेजी वहां भी बोली जाती है। चीन, जापान आदि देशों में बोली जाने वाली अंग्रेजी इंग्लैंड और अमेरिका में बोली जाने वाली अंगेजी से भिन्न है और यहां के लोगों की अपनी सीमाएं भी हैं। वे लोग अंग्रेजी बोलते तो हैं लेकिन स्वाभाविक रूप से नहीं और न ही सहज रूप में। उनके लिए अंग्रेजी पराई भाषा ही रहती है गैर-अंग्रेजी भाषी लोग जब अंग्रेजी बोलते हैं तो उन्हें परेशानी होना स्वाभाविक ही है, चाहे वह फ्रांस में हो, चीन में हो या कोरिया अथवा भारत में। ऐसे ही लोगों की अंग्रेजी की सीमाओं और दिक्कतों को देखते हुए एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा की जरूरत महसूस की गई। एक ऐसी भाषा जो पूरे विश्व में समझी जा सके और जिसे बोलने में किसी को कोई दिक्कत न हो। साथ ही साथ, वह किसी भी प्रकार के स्थानीय प्रभाव से मुक्त भी हो। ग्लोबिश का उद्देश्य इन्हीं सीमाओं को वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित करके आपसी संवाद की एक नई शैली का विकास करना है।

फ्रांस के डॉ. ज्यां पॉल नेरियेर ने इस दिशा में सक्रिय कार्य करने का बीड़ा उठाया है। यह नए किस्म की अंतर्राष्ट्रीय कामकाजी अंग्रेजी है जिसे ग्लोबिश नाम दिया गया है यह भाषा केवल 1500 शब्दों में सिमटी हुई है और डॉ नेरियेर का दावा है कि यह इंग्लैंड में बोली जाने वाली मूल अंग्रेजी, जो अंतर्राष्ट्रीय भाषा होने का दावा करती है, का दबदबा समाप्त कर देगी।

डॉ. नेरियेर ने अस्सी के दशक में आईबीएम के साथ काम करते हुए मार्केटिंग के लिए अपने देश विदेश के दौरों के दौरान गैर-अंग्रेजी भाषी लोगों की कठिनाइयों को महसूस किया और वे गंभीरता से अंग्रेजी के एक विकल्प के रूप में एक सरल, सुबोध और अंतर्राष्ट्रीय कामकाजी भाषा तैयार करने में जुट गए । इसके

प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने "Don't Speak English, Parlez Globish" और "Deconvrez Le Globish" नामक दो पुस्तकें भी लिखी। बहुत कम समय में ही यूरोप के अनेक गैर-अंग्रेजी भाषी देशों में यह भाषा लोकप्रिय होने लगी। डॉ. नेरियेर की पुस्तकों का कई भाषाओं (इटैलियन, स्पैनिश और कोरियन) में अनुवाद हो चुका है। जापानी भाषा में इस पर काम चल रहा है। इन भाषाओं में ग्लोबिश के शब्दकोश भी तैयार हो गए हैं। यहां तक कि "वॉयस ऑफ अमेरिका" के कुछ बुलेटिन भी ग्लोबिश में प्रसारित होने लगे हैं।

अब प्रश्न यह है कि ग्लोबिश है क्या? ग्लोबिश वस्तुतः मूल अंग्रेजी का ही व्यवस्थित और कामकाजी रूप है। कुछ लोग इसे डिकैफिनेटेड या लाइट अंग्रेजी भी कहते हैं। वास्तव में यह अंग्रेजी की ही सटीक और व्यवस्थित फॉर्म है । इसके सभी शब्द और ग्रामर भी अंग्रेजी के ही हैं। यहां तक कि अंगेजी-भाषी लोग भी इसे पढ़कर अथवा सुनकर कोई अंतर नहीं निकाल सकते। मूल अंतर यही है कि इसमें से कुछ गैर-जरूरी अथवा कम जरूरी चीजों को निकाल दिया गया है जैसे अंग्रेजी में कुछ टेंस (कालों में) विशेष क्रिया रूपों की आवश्यकता नहीं है उदाहरणार्थ-"आई हैव बीन राइटिंग ए लैटर" के स्थान पर "आई वर राईटिंग ए लैटर" भी लिखें, तब भी काम चल जाता है अर्थात यहां "हैव बीन" की आवश्यकता नहीं है। ग्लोबिश भाषा के वाक्य सदैव छोटे-छोटे ही होते हैं। इसमें "हू", "हूम", "व्हिच" जैसे शब्दों और पंक्चुएटेड शब्दों का प्रयोग नही किया जाता बल्कि उनके स्थान पर "पंक्चुएशन मार्क्स" का प्रयोग किया जाता है।

कुछ लोग यह अनुमान लगा सकते हैं कि ग्लोबिश सम्भवतः "यू सिट, आई गो" जैसी भाषा है। परन्तु यह सत्य नहीं है इसमें तो अंग्रेजी के 1500 ऐसे शब्दों को लिया गया है जिनका प्रयोग पूरे विश्व में सामान्यतः होता है तथा पूरे विश्व में इन्हीं सीमित शब्दों के प्रयोग द्वारा व्यक्ति अपनी बात सहज तथा स्वाभाविक रूप से कह सकता है उदाहरणार्थ, प्लांट, लीड, एक्शन, इंपैक्ट, ट्रस्ट, ड्यूटी, कॉमर्स, टूर, बिजनेस इत्यादि शब्दों के अनेक अर्थों और विभिन्न संदर्भों में इनके प्रयोगों के माध्यम से ग्लोबिश भाषा तैयार की गई है।

ग्लोबिश की विशेषता यह है कि यह लोगों के मन से अंग्रेजी नहीं जानने की कुंठा को दूर कर देती है। केवल 1500 शब्दों के माध्यम से आप अपनी बात भली-भांति व्यक्त कर सकते और यह भय खत्म हो जाता है कि आप अंग्रेजी में अपनी बात व्यक्त नहीं कर सकते। इसके बाद कुछ और ट्रिक्स के माध्यम से बिना अंग्रेजी ज्ञान बढ़ाए यह आपको लोगों के साथ सप्रेषण स्थापित करने में मदद करती है। यह आपकी भाषा को मूल अंग्रेजी से अलग और अधिक प्रोडक्टिव बनाती है।

भारत में अनेक स्थानीय भाषाएं बोली जाती हैं। अनेक भाषाओं वाले यूरोप में ही नहीं, भारत में भी अंग्रेजों के समय से ही संप्रेषण के लिए एक सर्वमान्य और सर्वग्राह्य भाषा की जरूरत रही है। अंग्रेजी तो भारत पर वैसे भी थोपी गई भाषा है दुर्भाग्य कहें अथवा वर्तमान परिस्थितियां कि हमने इसे बड़े उत्साह के साथ माथे पर बिठाया तथा इसके लिए अपनी सर्वसक्षम तथा समृद्ध हिन्दी की भी अवहेलना कर दी। ऐसे में यदि ग्लोबिश, अग्रेजी का स्थान ले लेती है तो भारत मानसिक रूप से भाषा की गुलामी का जुआ उतार फेंकेगा और अंग्रेजी न जानने की कुंठा से भी उबर सकेगा। ग्लोबिश चूंकि अंग्रेजी का ही छोटा रूप है तथा इसमें व्याकरण की जटिलता भी नहीं है, अतः इसे सीखना भी आसान है। वैसे भी भारत में अंग्रेजी बोलने वाले लोग 4-5 प्रतिशत से ज्यादा नहीं हैं। ऐसे में एक नई सरल ओर अंतर्राष्ट्रीय भाषा को कौन नहीं अपनाना चाहेगा।

वह दिन दूर नहीं जब इंग्लैंड के महज 12 प्रतिशत अंग्रेजी-भाषी लोग भी समझेंगे कि भविष्य में ग्लोबल मार्केट केवल अंग्रेजी के भरोसे नहीं चलने वाला। उन्हें इससे सहमत होना ही होगा कि विश्व में व्यवहार और व्यापार की भाषा के लिए उन्हें अपनी अंग्रेजी को आवश्यकतानुसार एडजस्ट करना ही होगा और यही एडजस्टमेंट वर्तमान में हमारे समक्ष ग्लोबिश भाषा के रूप में सामने आया है। तब अंग्रेजी केवल पुरानी संस्कृति अथवा क्वालिटी लैंग्वेज के रूप में ही रह जाएगी और अंग्रेजी के बल पर गर्व से अपना सिर ऊपर करके चलने वाले कुछ प्रतिशत अंग्रेजों का भाषा के क्षेत्र में एकाधिकार समाप्त हो जाएगा।

सहायक निदेशक (राजभाषा)
वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग,
जीवन दीप, नई दिल्ली

सतर्कता जागरूकता का प्रसार-भ्रष्टाचार निवारण की दिशा में सही कदम

प्रेम कुमार कुलदीप

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' जब से इस सृष्टि में मानव संरचना का उद्भव हुआ है तब से मनुष्य हमेशा नि:स्वार्थ भाव से अपना कर्म करता आया है। उसने कभी परिणाम या फल की इच्छा व्यक्त नहीं की। श्रीमद्भगवद्गीता का यह श्लोक महाभारत काल से मनुष्य को यह प्रेरणा देता आया है कि हे मनुष्य! तू सदैव अच्छे कर्म करता रह फल की इच्छा मत कर जिससे अच्छे कर्म का निश्चित ही अच्छा परिणाम मिलेगा। पिछली कई शताब्दियों से भ्रष्टाचार इस संसार में पांव पसारे हुए है। यह कोई नई वस्तु नहीं है अथवा एक या दो दशक पूर्व का प्रादुर्भाव नहीं हैं। यह तो सदियों से चला आ रहा मानव सभ्यता पर बुराई का एक साया है।

भ्रष्टाचार क्या है? भ्रष्टाचार भ्रष्ट + आचरण की सन्धि है जिसमें भ्रष्ट बुराई को इंगित करता है और आचार मनुष्य के दिन प्रतिदिन के कार्याकलाप और व्यवहार को दर्शाता है। अत: जीवन में बुरे आचरण को अपनाना ही भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार किसी भी रूप में किया जा सकता है चाहे अनैतिक रूप से कमाया हुआ धन, अनैतिक रूप से किया हुआ शारीरिक मानसिक और सामाजिक शोषण ये सभी भ्रष्टाचार की परिभाषा प्रदर्शित करते हैं। एक बुरे आचरण से भ्रष्टाचार की शुरुआत होती है जो कि व्यक्ति को निरन्तर इस ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है ।

भ्रष्टाचार का उद्भव :

जैसा कि आप और हम सभी जानते हैं कि भ्रष्टाचार का उद्भव आज से नहीं वरन् सैंकड़ों वर्षों पूर्व से हो चुका है। भारत में भी भ्रष्टाचार की जड़ें बहुत पुरानी हैं। मुगलकालीन, चाणक्य, कौटिल्य और अनेकों राजा-महाराजाओं के युगों में भी इसका प्रत्यक्ष प्रभाव देखने को मिलता है। यहां तक कि रामायण और महाभारत काल में भी भ्रष्टाचार के अनेकों उदाहरण देखने को मिल सकते हैं। महाभारत युग में गुरु द्रोणाचार्य द्वारा गुरुदक्षिणा में एकलव्य का अंगूठा मांगना ही भ्रष्टाचार का प्रत्यक्ष प्रमाण है। भारत में जब ब्रिटिश राज के समय भी भ्रष्टाचार का जबरदस्त प्रचलन था। अनेकों कुलीनों, राजाओं, जमींदारों और प्रभुत्व सम्पन्न लोगों ने अपने निजी स्वार्थ के लिए भ्रष्टाचार को अपनी प्रगति और विकास के साथ-साथ उसे धन संचय और समृद्धि का मार्ग बनाया जिसके द्वारा अनेकों लोगों का शोषण किया गया और उनको अन्यायपूर्वक यातनाएं भी दी गईं लेकिन इन युगान्तों में भ्रष्टाचार इतनी मात्रा, जगह और व्यवस्थाओं में व्याप्त नहीं था जितना कि वर्तमान में देखने को मिलता है। भ्रष्टाचार का उद्भव मुख्यत: अति महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए ही हुआ है। जिस दिन से भ्रष्टाचार का उद्भव हुआ है उस दिन से आज तक सदैव इसके प्रादुर्भाव में दिन दुगुनी और रात चौगुनी प्रगति हुई है और भ्रष्टाचार रूपी बाग हमेशा फलता-फूलता आया है । अनेकों महापुरुषों और समाज सेवियों ने इसकी रोकथाम के लिए भगीरथ प्रयत्न और प्रयास किए परन्तु सभी निरर्थक साबित हुए हैं। परिणामस्वरूप आज भ्रष्टाचार दीमक की भांति हमारी तमाम व्यवस्थाओं को चाट कर सफा कर रहा है । आज भ्रष्टाचार एक सर्वव्यापी रोग बन गया है, जो जीवन के सभी क्षेत्रों-धर्म, राजनीति, शिक्षा, व्यापार, चिकित्सा, न्यायतन्त्र, शासनतन्त्र, अर्थव्यवस्था आदि हर जगह पर दिखाई देता है।

भ्रष्टाचार-आवश्यकता और कारण

कहते हैं कि आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है परन्तु भ्रष्टाचार के मामले में यह बात बिल्कुल बेमानी साबित होती है क्योंकि यह एक बुराई और दुख का मार्ग है जिसे व्यक्ति आवश्यकता और जरूरत में कभी भी नहीं अपनाएगा। चूंकि लालच और लोभ में व्यक्ति अंधा होकर अपनी अत्यधिक आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए भ्रष्टाचार रूपी कांटों भरा मार्ग अपनाता है। यदि हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो हम पाएंगे कि आज व्यक्ति को अपनी तमाम आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भ्रष्टाचार ही सबसे सरल और अच्छा माध्यम नजर आता है जिसके द्वारा वह जल्दी से जल्दी अपनी मंजिल प्राप्त करने के लिए स्वप्न देखता है, फलस्वरूप वह भ्रष्टाचार के दलदल में फंसता ही जाता है।

आज नौकरशाही और भ्रष्टाचार एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं। राजनीतिज्ञों के लिए भ्रष्टाचार एक सेवा कर अथवा धंधा बन गया है और पूंजीपतियों के लिए यह व्यापार का एक अभिन्न अंग बन गया है। सद्गुण आदर्श और ईमानदारी जैसे शब्दों का इन लोगों के लिए कोई महत्व नहीं रह गया है और इन सब का उद्देश्य केवल धन और साधन का संचय मात्र रह गया है।

आज भ्रष्टाचार के मुख्यत: निम्नलिखित कारण हैं जो कि इसे न केवल बढ़ावा देते हैं बल्कि इसको प्रोत्साहित भी करते हैं :–

1. परिवार की आर्थिक जरूरतों की पूर्ति।
2. उच्च जीवन श्रेणी की चाह।
3. भोग और विलास की महत्वाकांक्षा।
4. समय पर न्याय और दोषियों को सजा न मिलना।
5. शासकीय कार्यों में पारदर्शिता की कमी।
6. भ्रष्ट व्यक्तियों की समाज एवं व्यवस्थाओं पर अच्छी पहुंच होना, आदि ।

उपरोक्त कारण लोगों को भ्रष्टाचार करने एवं दैनिक कार्यों में इसे अपनाने की प्रेरणा देते हैं, जो कि हमारे विशुद्ध समाज के लिए एक कलंक की तरह है जिसको जड़ से मिटाने की महती आवश्यकता है।

भ्रष्टाचार निवारण के उपाय

चिकित्सा विज्ञान में जिस तरह अनेकों बीमारियां मानव शरीर के लिए घातक सिद्ध हुई हैं, ठीक उसी तरह से अनेकों सामाजिक बुराईयों के सम्मिश्रण के रूप में भ्रष्टाचार हमारी तमाम सामाजिक व्यवस्थाओं को पंगु बना रहा है और वह कैंसर, एड्स, क्षय एवं अन्य संक्रमित रोगों की तरह हमारी मानसिक स्थिति को विकृत कर रहा है। इसको तुरन्त उखाड़ फैंकना आज की नितांत आवश्यकता बन गया है अन्यथा यह हमारी व्यवस्थाओं को खोखला कर देगा। भ्रष्टाचार आज वह माध्यम बन गया है, जो आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं न्यायिक व्यवस्थाओं को लालच के भ्रमजाल में फंसाकर मानव को जीवन के मूल उद्देश्य से विमुख कर देगा और जिसके द्वारा व्यक्ति सांसारिक मोह माया में फंसकर अपने कर्तव्यों को भूल जाता है एक पुरानी कथा है कि एक बार नारद और कृष्ण कहीं जा रहे थे तो नारद ने कृष्ण से पूछा कि हे प्रभु! आपकी माया अपरमपार है और कृपया एक बार मुझे उसके दर्शन करा दीजिए। इससे मैं धन्य हो जाउंगा। कृष्ण ने कहा कि ठीक है आज मैं तुम्हें माया के दर्शन करा देता हूं। दोनों बहुत दूर चलते गए। इस बीच कृष्ण ने कहा कि नारद मुझे बहुत प्यास लगी है और कहीं से पानी लाकर पिला दो। नारद पानी की तलाश में दूर-दूर तक गया परन्तु कहीं भी पानी दिखाई नहीं दिया। फिर नारद को दूर एक घर दिखाई दिया। नारद ने जाकर घर का दरवाजा खटखटाया तो एक सुन्दर युवती ने घर का दरवाजा खोला। नारद एकटक उसे देखता रहा और उस पर मोहित हो गया। वह युवती भी नारद को देखकर उस पर मंत्रमुग्ध हो गई। नारद ने युवती के पिता की सहमति से युवती से विवाह कर लिया और वहीं पर रहने लगे। कुछ समय बाद उनके बच्चे हुए और वे सुखपूर्वक रह रहे थे। बारह वर्ष के बाद वहां पर भयंकर बाढ़ आई जिसमें नारद की पत्नी और उसके बच्चे बह गए। नारद जब शोक में डूबे हुए थे तब कृष्ण प्रकट हुए और नारद से कहा कि नारद, तुम अब जल लेकर आए हो और मैं कब से तुम्हारा इंतजार कर रहा था। नारद को जब समझ में आया तो उसने कृष्ण से बहुत क्षमायाचना की। चूंकि नारद मोह और सांसारिक भ्रमजाल में पड़ गया था और जो उद्देश्य उन्हें दिया गया था उससे नारद विमुख हो गए थे।

अत: स्पष्ट है कि धन, लालच, मोह और सांसारिक भ्रमजाल में पड़कर हम अपने आदर्शों सद्गुणों, जीवन के मूल उद्देश्यों और कर्तव्यों से विमुख होकर भ्रष्टाचार रूपी दलदल में धंस जाते हैं । भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा प्रयोजन धन सम्पदा अर्जित करना है लेकिन हम सब यह जानते हुए भी अज्ञान में हैं कि यह धन कब तक हमारे साथ रहेगा और कब तक यह हमें सुख की प्राप्ति देगा। 'धन से किसी को वह सुख नहीं मिल सकता जो शायद दूसरों को आनन्दित करने पर मिलता है।' हम अपने आदर्शों, सद्गुणों और सुन्दर संस्कारों के माध्यम से भ्रष्टाचार रूपी दानव का खात्मा कर सकते हैं। इसके लिए हमें हमारे दैनिक जीवन में वैचारिक दृढ़ता को अपनाना होगा जिससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ेगा, हमारी मनोवृत्ति, बदलेगी और हमारे कदम भ्रष्ट आचरण और बुराई की तरफ डगमगाएंगे नहीं।

भ्रष्टाचार निवारण की दिशा में अगर हम सोचें तो सर्वप्रथम हमें अपने विचारों और धारणाओं को बदलना होगा और साथ ही साथ भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए निम्नलिखित कदम उठाने होंगे :

1. हमारी शिक्षा प्रणाली में कुछ इस तरह की अध्ययन सामग्री का समावेश करना होगा जो कि भ्रष्टाचार को एक अपमानजनक और घृणित कार्य इंगित करती हो जिससे हमारी आने वाली भावी पीढ़ी सतर्क होकर इससे दूर रह सकें।
2. युवा वर्ग को समुचित रोजगार उपलब्ध कराना होगा जिससे वे आर्थिक रूप से सक्षम हो सकें।
3. सरकारी एवं न्यायिक कर्मचारियों और अधिकारियों तथा कानून और व्यवस्था में लगे कर्मियों आदि की वेतन एवं सुविधाएं समुचित होनी चाहिए ताकि वे संतुष्ट होकर कार्य कर सकें, परिवार का गुजारा अच्छी प्रकार से कर सकें और अपने बच्चों को भी अच्छी शिक्षा दिला सकें जिसकी पूर्ति के लिए उन्हें अनैतिक रूप से धन अर्जित करने के लिए बाध्य न होना पड़े।
4. भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सख्त से सख्त कानून बनाया जाना चाहिए जिससे भ्रष्टाचारियों को कड़ी सजा मिल सके और लोग भ्रष्ट तरीकों को अपनाने के बारे में सोच भी न सकें।
5. राजनीतिक स्तर पर भ्रष्टाचार को रोकने के लिए भ्रष्ट जन प्रतिनिधियों के चुनाव में प्रत्याशी बनाने पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए और उन्हें शीघ्र और उचित दण्ड दिया जाना चाहिए।
6. आजकल धार्मिक स्थलों पर भ्रष्टाचार की बाढ़ सी आ गई है और जनता की जेब का दान में चढ़ाया हुआ लाखों करोड़ों रुपया चंद लोगों की पॉकेट मनी बन कर रह गया है और वहां का सारा धन गलत कार्यों एवं गलत जगहों पर खर्च किया जा रहा है जिसकी तुरन्त रोकथाम आज की अहम आवश्यकता बन गई है।
7. शासकीय कार्यों में पूर्ण पारदर्शिता अपनानी होगी ताकि लोगों को तथ्य छुपाने का मौका न मिल सके और साथ ही सूचना का अधिकार को शासकीय कार्यों में प्रभावी और निष्पक्ष रूप से लागू किया जाए जिससे आम आदमी को सही और समयपूर्वक सूचना मिल सके और भ्रष्टाचार एवं अनैतिक कार्य का जनता के सामने खुलासा हो सके।
8. जनता को जागरुक और सतर्क होना होगा, उन्हें भ्रष्टाचार का बहिष्कार करना होगा और काले बाजार की वस्तुएं न खरीदी जाएं तो भ्रष्टाचार की रोकथाम में यह एक अहम कदम होगा।
9. अनुशासन और नियमों का सख्ती से पालन करना होगा।

सतर्कता जागरुकता-प्रसार और माध्यम

संचार क्रांति ने मानव को आज इतना प्रभावित कर दिया कि वे दुनिया के किसी भी कोने की, किसी भी जगह की कोई भी छोटी से छोटी खबर पल भर में प्राप्त कर सकता है। पुराने जमाने में संचार साधनों का अत्यन्त अभाव था और बड़ी से बड़ी घटनाओं की सूचना और ख़बरों के प्रसार में महीनों लग जाते थे और

ढोल नगाडों, गुप्तचरों और हरकारों के द्वारा संदेशों और समाचारों को आवश्यक स्थानों और जनता तक पहुंचाया जाता था। ज्यों-ज्यों मानव ने विकास किया संचार माध्यमों का भी तेजी से विकास हुआ। आज विज्ञापनों के माध्यम से हर अच्छी बुरी चीज को बढ़ा चढ़ा कर बाजार में उतार दिया जाता है और यह बिक कर निर्माता को लाभ भी देती है।

इसे हमारा दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि भ्रष्टाचार की रोकथाम में सतर्कता जागरूकता के प्रचार प्रसार पर हमारा ध्यान अब तक गया ही नहीं न ही इस ओर हमारी सरकारों ने कोई ठोस कदम उठाए। आप देखते होंगे कि हर छोटी बड़ी कम्पनियां अपने उत्पादों की बिक्री बढ़ाने के लिए लाखों करोड़ों रुपया विज्ञापनों पर फूंक देती है। सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा पोलियों, एड्स, मलेरिया आदि से बचाव के लिए टेलीविजन चैनल्स, अखबारों, रेडियों, बैनर और होर्डिंग्स के द्वारा विज्ञापन में लाखों रुपए खर्च करके जनता का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है। आय कर, सेवा कर और अन्य करों को समय पर जमा करने के लिए कितने ही विज्ञापन दिए जाते हैं परन्तु भ्रष्टाचार उन्मूलन और रोकथाम के लिए बहुम कम विज्ञापन और प्रचार प्रसार देखने को मिलता है। यदि कुल विज्ञापनों की संख्या का दो-चार प्रतिशत विज्ञापन भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए आते तो भ्रष्टाचार को काफी हद तक कम किया जा सकता था। चूंकि आप देखते हैं कि विज्ञापनों का हमारे जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है और इस दिशा में ध्यान दिया जाता तो सतर्कता जागरूकता का जबरदस्त प्रसार हो सकता। सतर्कता जागरूकता के लिए सही तथ्यों का प्रचार प्रसार ही सबसे सशक्त माध्मय है जो हमें भ्रष्टाचार के विरुद्ध हर प्रकार से सतर्क बनाता है । सतर्कता के प्रति जब हमारी जागरूकता और जवाबदेही बढ़ेगी तो निश्चित रूप से हमारे मन में भ्रष्टाचार के प्रति अपमान और घृणा भर जाएगी और हम ऐसे घृणित और अपमान भरे कार्य को करने की सोचेंगे तक नहीं। अत: सतर्कता जागरूकता के प्रसार में आज हर व्यक्ति, हर संस्था और सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों को निस्वार्थ भाव से आगे आने की आवश्यकता है। सतर्कता जागरूकता के प्रयास को अब टेलीविजन समाचार-पत्रों, पोस्टर बैनर और होर्डिंग्स के द्वारा हम जन-जन तक पहुंचा सकते हैं, फलस्वरूप लोग भ्रष्टाचार के बुरे परिणामों के बारे में जागरूक हो सकेंगे तथा उनमें एक नऐ प्रकाश का देदीप्यमान होगा जो उन्हें भ्रष्टाचार रूपी अंधकार से रोशनी की ओर ले जाएगा।

सर्तकता जागरूकता का प्रसार-भ्रष्टाचार निवारण की दिशा में सही कदम

हर एक बुरे कार्य की रोकथाम अथवा अच्छे कार्य की शुरुआत के लिए कोई न कोई ऐसा माध्यम चाहिए जो उसे सही दिशा प्रदान करता हो। भ्रष्टाचार की दिशा में सतर्कता जागरूकता का प्रसार एक आवश्यक और सही कदम है जिसके माध्यम से हम जनता को भ्रष्टाचार के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूक कर सकते हैं जनता में जब भ्रष्टाचार के बारे में जागरूकता बढ़ेगी, उन्हें उसके दुष्परिणामों के बारे में सोचने पर विवश होना होगा तब जनता स्वत: ही भ्रष्टाचार से विमुक्त हो जाएगी।

जब सतर्कता जागरूकता के प्रसार से लोगों में यह धारणाएं कायम की जा सकती हैं कि भ्रष्टाचार ने सदैव मानव सभ्यताओं को विनाश की ओर धकेला है, उससे लोगों को यातना, प्रताड़ना, कष्टों और दुखों के अलावा कुछ नहीं दिया है तो निश्चित ही लोग इससे दूर रहने की चेष्टा करेंगे। भ्रष्टाचार ने लोगों को सदैव सम्मार्ग और सद्गुणों से विमुख कर शोषण, अत्याचार, वासना, कुकर्म ओर अनैतिकता की ओर धकेला है। सर्तकता जागरूकता के प्रसार से जब मनुष्य को इन बातों का आभास होगा तब उसके विचार, उसकी भावनाएं और उसकी कार्यशैली बदल जाएगी और वह इस निर्णय की ओर अग्रेषित होगा कि वह जीवन में भ्रष्ट आचरण करने के बारे में सोच भी नहीं पाएगा।

मैं यह निश्चित रूप से कहना चाहूंगा कि भ्रष्टाचार निवारण और उन्मूलन की दिशा में सतर्कता जागरूकता का प्रसार एकदम सही और ठोस कदम साबित हो सकता है। इस ओर निश्चय ही हमारा ध्यान अब जाना चाहिए क्योंकि अब तक प्रचार माध्यमों को हमने भ्रष्टाचार निवारण का जरिया नहीं बनाया है और अगर बनाया होता तो भ्रष्टाचार निवारण में हम काफी हद तक सफल हो गए होते। अत: सतर्कता, जागरुकता का

प्रसार भ्रष्टाचार निवारण और उसे उखाड़ फैंकने की दिशा में एक अंधेरे में उजाले की किरण साबित हो सकता है । आवश्यकता है इसे तुरन्त प्रभावी रूप से अमल में लाए जाने की।

कहते हैं दृष्टि से इन्सान की फितरत बनती है। जैसी हमारी दृष्टि या सोच होगी वैसी ही हमारी करनी अर्थात कर्म होंगे। हमारी सोच ही हमें आशावादी और निराशावादी बनाती है। अगर भ्रष्टाचार को सही कार्य मानेंगे तो हम भ्रष्टाचार करने में नहीं हिचकिचाएंगे और अगर भ्रष्टाचार को एक बुराई के रूप से देखेंगे तो उससे घृणा करेंगे और कभी उस ओर अपना कदम नहीं बढ़ाएंगे। उसके लिए हमें आवश्यकता होगी वैचारिक दृढ़ता और आत्म-विश्वास की, जिसके सहारे हम भ्रष्टाचार को कभी हमारे स्वभाव, व्यवहार और आचरण में नहीं आने देंगे। जैसा कि भष्टाचार का मूल कारण–व्यक्ति की आवश्यकता और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करना है। शेक्सपीयर ने बहुत अच्छा सन्देश हमारे जीवन के लिए दिया है–''महात्वाकांक्षा वह पाप है जिसने देवदूतों को भी पतित कर दिया''। अत: हमें सदैव अपनी आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं को सीमित रखना चाहिए ताकि उनकी पूर्ति को लिए भ्रष्टाचार का सहारा न लेना पड़े।

आज भ्रष्टाचार भविष्य के लिए धन संचय का एक पर्याय बन गया है पर वह धन कब तक सुरक्षित होगा यह मनुष्य को खुद को नहीं पता, पर फिर भी मनुष्य अनावश्यक धन का संचय क्यों करता है जो आगे चल कर उसी के लिए संकट, दुख: कष्ट और डर का एक मुख्य कारण बन सकता है।

धन बल सींचे मानवा, कु कबहु सुखी ना होय।
जो सींचे तु आत्म-बल, अति-उपयोगी होय।।

अर्थात हे मनुष्य तू धन का अनावश्यक संचय क्यों करता है जो कतई सुरक्षित नहीं है। तुझे आत्मबल और आत्म-विश्वास का संचय करना चाहिए जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी है। अत: मनुष्य को सदैव भ्रष्टाचार की अपेक्षा ईमानदारी और सच्चाई का मार्ग अपनाना चाहिए।

जय भारत

–निजी सचिव,
राजस्थान परमाणु बिजलीघर
डाकघर: अणुशक्ति-323303
वाया कोटा (राजस्थान)

झील

मनजीत शर्मा 'मीरा'

दूर क्षितिज तक पाँव पसारे
दर्पण-सी फैली है झील
खेती रंग-बिरंगी नावें
चित्रकला-सी लगती झील

उन्नत पर्वत के शिखरों पर
लहराते, बलखाते पेड़
जलछाया बन सो जाते जब
लहर-थपकियां देती झील

शांत, मौन, निश्चल आँखों से
तकती रहती इकटक नभ को
सन्नाटे में स्याह रात के
चाँद की बनी चकोरी झील

बदली में करता अठखेली
लुकाछिपी में माहिर चाँद
सराबोर अपने अश्कों में
बाट निहारा करती झील

उतर सीढ़ियाँ नभ की चंदा
आता मिलने प्रेयसी से
समा लेती प्रतिबिंब को उसके
प्रेम से आकुल प्यासी झील

रातभर थामे रहता दामन
आवारा, मनमौजी, चाँद
देता दगा सहर होने पर
रस्ता तकती दिनभर झील

खलनायक सूरज की किरणें
आग लगा देती पानी में
शीशे-सा तन जल-जल जाता
पर उफ तक ना करती झील

बारिश की रिमझिम बूंदों से
भर जाती जब सूनी गोद
गर्भवती नारी की भांति
मुस्कराती, खुश होती झील

तट पर आकर प्रेमी जोड़े
भेद खोलते प्रेम-प्यार के
राज दफन हैं सब सीने में
मोल कोई ना लेती झील

जब कोई मनचला फेंकता
पत्थर उसके सीने पर
छिन्न-भिन्न हो जाती हस्ती
हाहाकार न करती झील

चुपके-चुपके रो लेती है
प्रतिकार नहीं लेती झील
फिर समेट लेती है खुद को
नारी-सी क्यों लगती झील।

–अनुभाग अधिकारी
कार्यालय, महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी),
हरियाणा, चंडीगढ़